

असाधारण EXTRAORDINARY

भाग III—खण्ड 4 PART III—Section 4

प्राधिकार से प्रकाशित PUBLISHED BY AUTHORITY

सं॰ 15] No.,15] नह विल्ली, सोमवार, जुलाई 30, 1984/श्रावण 8, 1906 NEW DELHI, MONDAY, JULY 30, 1984/SRAVANA 8, 1906

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या को जाती हैं जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके

Separate Paging is given to this Pact in order that it may be filed as a separate compilation

भायकर अधिनियम, 1961 [1961 का 43] की धारा 269 घ [1] के अधीन मुचना

कार्याक्यः, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज, कानपुर

कानपुर, 23 जुलाई, 1984

निषेण नं. ए-10/84-85:— प्रतः मुझे जे० पी० हिलारी, प्रायकर प्रिविन्यम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इमके पश्चात् अन प्रधिन्तियम) कहा गया है) की घारा 269 ख के प्रधीन सञ्जम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिमका उचिन बाजार मूख्य 25,000 द०से प्रधिक है धौर जिसकी सं० 5385 है तथा जो मथुरा में स्थित है (धीर इससे उपाध्य धनुमूची में घोर पूर्ण रूप से बणित है) , रजिस्ट्रीकर्ता प्रधिकारी के कार्यान्य मथुरा में, रजिस्ट्रीकरण प्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के प्रधीन तारीख 4-10-83 को पूर्वोच्य सम्पत्ति के उचिन बाजार मूल्य से कम के दृष्णमान प्रतिकल के लिए प्रस्तरित की गई है धीर मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उवित बाजार मूल्य, उसके दृष्णमान प्रतिफल से, ऐसे वृथ्यमान प्रतिफल के पन्त्रह प्रतिशत से घिक्त है घोर प्रस्तरक से, ऐसे वृथ्यमान प्रतिफल के पन्त्रह प्रतिशत से घिक्त है घोर प्रस्तरक

(मन्तरको) मौर मन्तरिती (मन्तरियो) के बीच ऐसे मन्तरण के लिए सय पाया गया प्रतिफल, निम्नितिखित उद्देश्यों से युक्त प्रन्तरण, लिखित मे बास्तिबक्त रूप से कथित नहीं किया गया है।

- (क) ग्रन्तरण से हुई किसी ग्राय की बाबत, ग्रायकर ग्रिश्वनियम, 1961 (1961 का 43) के ग्रिश्वीन कर देने के प्रकारक के दायित्व में कभी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए ग्रीर/या
- (ख) ऐसे किसी माय या किसी अन ना प्रत्य प्रास्तियों की निर्तें भारतीय प्रान्कर प्रवित्यम, 1922 (1922 का 11) या प्रायकर प्रवित्यम, 1961 (1951 का 43) या कर प्रवित्यम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोगार्थ प्रतिरित्ती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना वाहिए था, छित्रामें में सुविधा के लिए

भत प्रज उक्त प्रधितियम की धान 269 ग के अनुसरण में, मैं उक्त प्रधितियम की धारा 269 घ को उन धारा (1) के प्रधीन, निम्नलिथिन व्यक्तियों प्रणीत् —

श्रोमती उमा गोस्त्रामी, पत्नी (मन्तरक)
 श्री सुरेश चन्द्र गोस्लामी
 श्रीम्पयर नगर, मथुरा एव मन्य लोग

- श्री नारायन हरी गुप्ता, पृक्त (ग्रस्तरिनी)
 श्री राम वयाल गुप्ता, निरु गऊपाट, मध्ना
- 3. श्री/श्रीमती/कुमारी धन्तरिती (बहु व्यक्ति, जिसके ध्रमिभोग में सम्पत्ति है)

को यह सुचना जारी करके पूर्वोंक करणाति के खार के लिए कार्यवाहियां गुरू करता हूं 1 उक्त समाति के कर्ज कार्य में कोई भी प्राक्षेप :--

- (क) इस भूजना है। जीपल प्रिक्तिक वी तारीख से 45 दिन की प्रविध, भी तत्मम्बन्धी व्यक्तियों पर सूजना की तामील से 30 की भ्रवधि। जो भी भ्रवधि। बोद में समान्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त, वपक्रित्यों, के स्विध विभिन्न के द्वारा।
- (ख) इस सूचना के राजपत्न में प्रकाशन कि तिरीख के 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हिनजड़ा किसी प्रस्य व्यक्ति द्वारा ग्राह्मोहस्ताक्षरी के पास लिखिन में किए जा सकेंगे

स्पष्टीकरण :-- इसमें प्रयुक्त णब्दों और पदों का, जो प्रायकर श्रिधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अध्याय 20 क में, परिभाषित है, वही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया

ग्रन्युषी

एक किला जमीन वाके डैम्पियर नगर, मथुरा।

तारीख : 23-7-84

मोहर:

(जो लागून हो उसे काट दीजिए।)

Notice Under Section 269 D (1) of the incometax Act, 1961 (43 of 1961)

Office of the Inspecting Assistant Commissioner of Incometax, Acquisition Range, Kanpur

Kanpur 23rd. July, 1984

Ref. No. A-10|84-85.—Whereas I, J. P. Hilori being the Competent Authority under section 269-B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (here-inafter referred to as the said Act) have reason to believe that the immovable property having fair market value exceeding Rs. 25,000|- and bearing number as per schedule situated as per fully described in the schedule (and more schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Mathura on 4-10-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration and that the consideration such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :-

- (a) Facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer, and or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have

not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of section 269-C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquistion of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of section 269-D of the said Act to the following persons, namely:—

- 1 Shrimati Uma Goswami, woo Sh. Suresh Chandra Goswami, Dampier Nagar, Mathura and others. (Transferor)
- Shri Narayan Hari Gupta, S|o. Shri Ram Dayal Gupta, R|o. Gau Ghat, Mathura. (Transferee)
- 3. Shri Narayan Hari Gupta, S|o Shri Ram Dayal Gupta, R|o. Gau Ghat, Mathura (Persons in occupation of the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

SCHEDULE

Land at Dampier Nagar, Mathura.

Date: 23-7-84

Seal:

निर्देश नं. ए-15/84-85:—अन. मुझे जे. पी. हिलोरी, श्रायकर प्रधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसके परवात् उकत श्रधि-नियम' कहा गया है) की धारा 269 ख के प्रधीन मक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्यत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- में प्रधिक है श्रीर जिसकी बंव 2416/83 है तथा जो धागरा में स्थित है (ग्रीर इससे उपावक्ष अनुभूती में घोर पूर्ण रूप में पणित है), रजिस्ट्रीकर्ता प्रधिकारी के कार्यालय फीहाबार में, रजिस्ट्रीकरण प्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के प्रधीन तारीख 22-10-83 को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मृष्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है श्रीर मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति, का उचित बाजार मृष्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, ऐसे दृश्यमान प्रतिफल के पण्डह प्रतिशत में अधिक है भीर भन्तरक (ग्रन्तरकों) ग्रीर अन्तरिती (ग्रन्तरियों) के बीच ऐसे ग्रन्तरण

को लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्निक्कित उद्देश्यों से युक्त प्रस्तरण, सिक्कित में भास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है।

- (क) घन्तरण से हुई किसी प्राय की बाबन, प्रायकर प्रधिनियम 1961 (1961 का 43) के प्रधीन कर देने के प्रकारक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में मुविधा के लिए ग्रीप/या
- (ख) ऐसे किसी भाष या किसी धन या श्रय्य श्रास्तियों की जिन्हें भारतीय श्रायकर श्रिष्ठितियम, 1922 (1922 का 11) या श्रायकर श्रिष्ठित्यम, 1961 (1961 का 43) या धन-कर. श्रिष्ठित्यम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ ग्रन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सर्थिश के लिए

भ्रता भ्रव उक्त भ्रधिनियम की धारा 269 ग के अनुमरण में, मैं उक्त भ्रधिनियम की धारा 269 घुकी उप श्वारा (1) के भ्रधीन, निम्न-निश्चित व्यक्तियों भ्रयीत् :---

- श्री चिरंजी लाल व बेदी राम, (ग्रन्परका)
 पूत्रगण, श्री वया राम, नि. गढ़ी,
 गाना उचग्राम-पट्टी मुजपफर पुर, फनेहाझाव (ग्रागरा)
- 2 श्री राम लक्षिन, पुत्र राम त्याल (श्रन्-िर्ना) नि. गढ़ी थाना, उप० पट्टी मृजनकरपुर, पर. फनेहाबाद, जि. श्रागरा ,
- 3. श्री/श्रीमती/कुमारी श्रन्तस्ति (वह व्यक्ति, जिसके ग्रीधमोग में ्सम्पत्ति है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पति के भर्जन के लिए कार्यवाहियां मुरू करता हूं। उक्त सम्पत्ति के ग्रर्जन के सम्बन्ध में कोई भी प्राक्षेप.—∸

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाणन की तारी वे से 45 दिन की प्रविध, या प्रत्मस्वन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 की प्रविध, जो भी प्रविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति के द्वारा !
- (ख) इस सूचना के राजपत्न मे प्रकाशन की तारीख के 45 दिन के श्रीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हिनवद्ध किनी ग्रन्थ व्यक्ति द्वारा ग्रह्मोहस्ताक्षरी के पास लिखिन मे किए जा नकेंगे।
- स्पर्योकरण :-- इसमे प्रयुक्त शब्दों भीर पदा का, जा आग्रकर सिध नियम; 1961 (1961 का 43) के अध्याय 20 क में परिभाषित हैं, वहीं भयें होगा जो उन श्रध्याय में दिया गया है ।

श्रनुसूची

माराजी बाके मौजा पट्टी मुजफ्फरपुर, शागरा

तारीख: 23-7-84

मोहर:

(जो लागून हो उसे काट दीजिए।)

Ref. No. A-15|84-85.—Whereas I, J. P. Hilori being the Competent Authority under section 269-B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the said (Act) have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25.000|-and bearing number as per schedule situated as per schedule (and more fully described in the schedule annexed • hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Fatehabad on

22-10-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) Facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer, and or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of section 269-C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of section 269-D of the said Act to the following persons, namely:—

- Shri Chiranji Lal & Ved Ram, Sons of Sri Daya Ram, R|o Garhi Thana, Sub Vill. Patti Muzaffarpur, Fatehabad Distt, Agra. (Transferor)
- 2. Shri Ram Lachhin, So Sri Ram Dayal, Ro Garhi Thana, Sub Vill, Patti Muzaffarpur, Parg-Fatehabad, Distt. Agra

(Transferee)

Shri Ram Lachhin, So. Sri Ram Dayal, Ro. Garhi Thana, Sub Vill. Patti Muzaffarpur, Parg-Fatehabad, Distt. Agra.

(Persons in occupation of the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

SCHEDULE

Aarazi at Mauja Patti Muzaffarpur Agra.

Date: 23-7-1984

Seal ·

निवेश मं. ए-16/84-85.— प्रत मुझे जे. पी हिलोरी, प्रायकर प्रधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसके पश्चात् उकत प्रधिनियम कहा गया है) की धारा 269 ख के प्रधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- से प्रधिक है और जिसकी सं 5683 है तथा जो राजपुर, मयुरा में स्थित है (प्रीर इसने उपावद्ध प्रनुमूची मे प्रौर पूर्ण कप से वणित है), रजिस्ट्रीकर्ता प्रधिकारी के कार्यात्रय मथुरा में, राजस्ट्रीकरण प्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के प्रधीन तारीख 13-10-83 को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के वृश्यमान प्रतिफल के लिए प्रन्तरित की गई है प्रौर मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य; उसके दृश्यमान प्रतिफल से, ऐसे वृश्यमान प्रतिफल के पन्द्रह प्रतिशत से प्रधिक है भन्तरक (प्रन्तरकों) प्रौर प्रन्तरिक्ष (प्रक्तिरयों) के बीच ऐसे प्रन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्मलिखन उद्देश्यों से युक्त प्रन्तरण, लिखात में बास्तिक रूप से कथित नहीं किया गया है।

- (क) धन्तरण से हुई किसी ग्राय की बाबत, भायकर श्रिवितयम, 1961 (1961 का 43) के ग्रधीन कर वेने के भरतरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए भीर/या
- (ख) ऐसे किसी धाय या किसी धन या धन्य धारितयों की जिन्हें भारतीय भायकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या आयकर प्रधिनियम, 1961 (1961 का 43) या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ प्रतिती धाराप्रकट नहीं किया गया था या किया जीना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए

भतः भव उन्त प्रधिनियम की घारा 269 ग के प्रनुसरण में, मै उक्त प्रधिनियम की धारा 269 ग की उपधारा (1) के प्रधीन, निस्तिनिधित व्यक्तियों भ्रषत् :---

- 1. श्री मदन लाल चौधरी, समित्र (भन्तरक) पंचायती धर्मशाला, मृत्वावन
- बल्लभ मेमोरियल ट्रस्ट, द्वारा (प्रन्तरिती) श्री दिख्यकान्त शीकम लाल पारेख, बल्लभ सदन, ग्राश्रम रोड, ग्रहमवाबाद
- 3. श्री/श्रीमती/कुमारी भन्तरिती (वह व्यक्ति, जिसके अधिमोग मे सम्पत्ति है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के धर्जन के लिए कार्यवाहियाँ शुरू करता हूं। उक्त सम्पत्ति के घर्जन के सम्बन्ध में कोई भी भाक्षेप:—

- (क) इस सूचना के राजपन्न में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की भविति, या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तासीक्ष 30 की भविति, जो भी भविधि बाद में समान्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति के द्वारा !
- (का) इस सूचना के राजपम्र में प्रकाशन की तारीख के 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद्ध किसी मन्य ध्यक्ति द्वारा मम्रोहस्ताकारों के पास लिखित में किए जा सकेंगे।
- स्पष्टीकरण .— इसमें प्रयुक्त भाड्यों भीर पदो का, जो आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के प्रध्याय 20 क मे परिभाषित है, वहीं धर्ष होगा जो उस भाष्ट्याय में दिया गया है।

भनुमूची

द्याराजी वाके राजपुर

सारीखा: 23784 मोहर (क्षों लालून हो उसे काट बीजिए)

Ref. No. A-16|84-85.—Whereas I, J. P. being the Competent Authority authorised by the Central Government in this behalf under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), hereinatter referred to as the said Act, have reason to believe that immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000 and bearing No. 5683 situated at Rajpur, Mathura (and more fully described in the schedule below) has been transferred and registered under the registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Mathura under registration No. 5683 dated 13-10-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the transferor(s) and transferee(s) has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer and or;
- (b) facilitating the concealment of any income or any money or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957).

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:

- Shri Madan Lal Chowdhry, (Transferor) Secy., Panchayati Gaushala, Brindaban and others.
- Ballabh Memorial Trust (Transferee)
 Through Sri Indrikant Jikamlal,
 Parikh, Ballabh Sadan, Ashram Road,
 Ahmedabad.
- Ballabh Memorial Trust, Through Sri Indrikant Jikamlal, Parikh, Ballabh Sadan, Ashram Road, Ahmedabad.

[Person(s) in occupation of the property].

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned.

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of the notice on the respective persons whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within '45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

SCHEDULE

Aarazi at Rajpur.

Date: 23-7-84.

Seal:

†Strike off where not applicable

निर्देश नं. ए-17/84-85:--अतः सुझे जे. पी. हिलोरी, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है) की धारा 269 ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिमका उचित बाजार मूल्य 25,000/- से अधिक है और जिसकी सं. 22734 है तथा जो आगरा में स्थित है (और इससे उपाबद्ध अनुमची में और पूर्ण रूप से विणत है), रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय आगरा में, रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन तारीख 11-10-83 को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुझे यह विण्याम करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, ऐसे वृश्यमान प्रतिफल के पन्त्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्यों से युक्त अन्तरण, लिखित में वास्तिक रूप से कथित नहीं किया गया है।

- (क) अन्तरण से हुई िकमी आय की बायत, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अधीन कर देने के अन्तरक के वायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए और/या
- (ख) ऐसे किसी आय या किसी घन या अन्य आस्तियों की जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अस्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में मुविधा के लिए

अतः अब उक्त अधिनियम की धारा 269 ग के अनुसरण मे, मैं उक्त अधिनियम की धारा 269 व की उपधारा (1) के अधीन, निम्न-लिखित व्यक्तियों अर्थात् :--

 श्री दुम्हा व कालीचरन, पृक्ष श्री प्यारे लाल, मौ. ककरेठा, तह. व जि. आगरा (अन्तरक)

 भाग्य नगर सहकारी गृह निर्माण समिति लि., द्वारा श्री मुन्ना सिंह सिवत, नि. कच्ची सराय ताजगज, आगरा । (अन्तरिती)

3. श्री/श्रीमती/कुमारी अन्तरिती (बह व्यक्ति, जिसके अधिभोग में सम्पत्ति है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्ययाष्ट्रियां शुरू करता हुं। उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप:---

(क) इस सूचना के राजपत में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अवधि, या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अवधि, जो भी अर्पाब बार में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति के द्वारा ।

(ख) इस सूचना के राजपन्न में प्रकाशन की तारीख के 45 दिन के भीतर उसत स्थावर मम्पत्ति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखिन में किए जा सकींगे।

म्प्टीकरण :-- इसमे प्रयुक्त शब्दों और पदो का जो आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अध्याय 20 क में परिभाषित है, वही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

खेत नम्बर 83 वाके मौजा ककरेठा, स. व जि आगरा

तारीख : 23/7/84

मोहर:

(जो सागून हो उसे काट दीजिए)

Ref. No. A-17/84-85.—Whereas I. J. P. Hilori, being the Competent Authority under section 269-B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the said Act), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000 and bearing number AS PER SCHEDULE situated at AS PER SCHEDULE (and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Agra on 11-10-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :-

- (a) Facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer, and or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of section 269-C of the said Act, I hereby initiate proceeding for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of section 269-D of the said Act to the following persons, namely:

S Shri Tunda & Kalicharan,
 Sons of Sh. Pyare Lal,
 Mauja-Kakretha.
 Teh. & Distt. Agra. (Transferor)

Bhagya Nagar Sahkari Grah,
 Nirman Samiti Ltd.,
 Through Sri Munna Singh, Secy.,
 R|o Kachi Sarai Tajganj, Agra.
 (Transferee)

 Bhagya Nagar Sahkari Grah, Nirman Samiti Ltd., Through Sri Munna Singh, Secy., R|o Kachi Sarai Tajganj, Agra.

(Persons in occupation of the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

SCHEDULE

Agricultural Land No. 83 at Mauja-Kakretha, Teh. & Distt. Agra.

Date: 23-7-84.

Scal : ·

+Strike off where not applicable.

निवेश नं० ए-1687/83-84:—अतः मुझे जे. पी. हिलोरी, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (इसके पश्चान 'उक्त अधिनियम' कहा गया है) की धारा 363ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वाम करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 1,00,000 से अधिक है और जिसकी संख्या 8079 है तथा जो अलीगढ़ में स्थित है (और इसमे उपावद्ध अनुस्ची में और पूर्ण रूप से विश्वाम, 1908 (1908 का 16) के अधीन नारीख 7-10-83 को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुझे यह विश्वाम करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, ऐसे दृश्यमान प्रतिफल के पत्त्वह प्रतिशाम से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरित (अन्तरियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्यों से युक्त अन्तरण, लिखित में वास्तिक रूप से कथित नहीं किया गया है।

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अधीन कर देने के अस्परक के वायित्व में कभी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए और/या
- (ख) ऐसे किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियो की जिन्हें भारगीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्सरिती हारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए

अतः अत्र उक्त अधिनियम की धारा 269 ग के अनुसरण में, मैं उक्त अधिनियम की धारा 269 घ की उपधारा (1) के अबीन , निम्न-लिखिन व्यक्तियों अर्थान् :--

श्री ईशवर वास पुत्र श्री जय दयाल अरोरा
 नि. खाईडोरा
 अलीगढ़ (अन्तरक)

2. श्रीमती सुधा वार्षतेय पत्नी श्री विजय प्रकाण वार्षतेय ,नि. सराय बाग्ह सैनी णहर अलीगढ़ (अन्तरिती)

3. श्री /श्रीमतीं/कुमारी केता (बह व्यक्ति, जिसके अधिभोग में, सम्पत्ति है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए. कार्यवाहियां णुढ़ करता हू । उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप ंच

- (क) इस सूचना के राजपल में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधि, या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीक्त व्यक्तिया में से किसी व्यक्ति के ताग ।
- (ख) इस सूचना के राजपन्न में प्रकाशन की तारीख़ के 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पन्ति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखिन में किए जा सकेंगे।

स्पष्टीकरण :-- इसमें प्रयुक्त शब्दों पर और पदों का, जो आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अध्याय 20 क में परिभाषित है, यही अर्थ होगा जो उस अध्याय मे दिया गया है ।

अन्मुची

मकान स्थित खाई डोरा अलीगढ़

तारीख : 24-7-84

मोहर:

(जो लागून हो उसे काट दीजिए)

Ref. No. A-1687 KNP 83-84.—Whereas I, J.P. Hilori, being the Competent Authority authorised by the Central Government in this behalf under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), hereinafter referred to as the said Act, have reason ot believe that immovable property having a fair market value exceeding Rs. 1,00,000 and bearing No. 8079 situated at Agra (and more fully described in the schedule below) has been transferred and registered under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Agra the said Act read with rule 48DD of Income-tax Rules, 1962 under registration No. 8079 dated 7-10-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the transferor(s) and transferee(s) has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:

(a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer and or;

(b) facilitating the concealment of any income or any money or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957).

Now, therefore in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:

 Shri Ishwar Das S|o. Shri Jai Dayal Arora R|o. Khai Dora Aligarh (UP.)

(Transferor)

- Smt. Sudha Varshney Wo Shri Vijay Prakash Varshney Ro. Sarai Barshseni, Aligarh. (Transferee)
- 3. Shri Smt. ransferee (person(s) in occupation of the property).

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned.

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of the notice on the respective persons whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation.— The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

SCHEDULE

House at Khaidora, Aligarh

Date: 24-7-1984.

Seal:

†Strike off where not applicable

कानपार, 26 जमाई, 1984

निर्देश न. ए-1750/कं एन पी/९3-84.—अन मुझे ज. पी. हिलोगी आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे कमके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है) की घारा 26 अब के अधीन मक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थायर सस्पत्ति, जिसका उचित बाजार मृत्य 1,00,000/- से अधिक है और जिसकी सं. —है तथा जो मोठ सहगल पुरा मथुरा में रियत है (और इससे उपावद्ध अनुसूची में और पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्ता अधिकार के दार्थालय मथुरा में, रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन नारीख 19-9-83 का पूर्वोक्त सपित के उचित बाजार मृत्य से कम के दृण्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मृत्य, उसके दृण्यमान प्रतिफल से, ऐसे दृण्यमान प्रतिफल के पन्दह प्रतिगत से अधिक है अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए

तप पाया गया प्रतिकल, निम्नलिखिन उद्देण्यो से गुनन अन्तरण, लिखिन में वास्तिवक रूप से कथित नहीं किया गया है ।

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अधीन कर देने के अस्तरक के दायित्व में कभी करने या उससे बचने में मुविधा के लिए और/या
- (ख) ऐसे किसी आय या किसी धन या अन्य आस्मियो को जिन्हें भारताय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयाजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में मुविधा के लिए

अतः अब उक्त अधिनियम को धारा 269म के अनुमरण में, मैं उक्त अधिनियम को धारा 269 घ की उप धारा (1) के अधीन, निम्निकित ध्यक्तियों अर्थान, ---

- श्रीमती भागवान देवी पस्ती राग घरन दाम , नि मोहल्ला सहगल पुरा मथुरा (अन्तरक)
- श्रीमती लक्ष्मी देवी पत्नी श्री श्रीनियामणी
 न. वाकी गली भथुरा (अन्तरिती)

को यह मूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां सुक करता हूं। उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपन्न में प्रकाशन की नारीख से 45 दिन की अविध, तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की नामीत 30 दिने की अविध, जों भी अविधि बाद में समान्त हाती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति के द्वारा ।
- (ख) इस मूचना के राजपन्न में प्रकाशन की तारीख के 45 दिन के भीतर उक्त स्थाबर सम्पन्ति में हिनबढ़ किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहरताक्षरी के पास लिखिन में किए जा सकेंगे।

स्पष्टीकरण --- इसमे प्रयुक्त मन्दों और पदों का, जो आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अध्याय 20क में परिभाषिय है, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुमृची

मकान मोठ, सहगल पुरा, मथुरा

नारीख 26-7-84

मोहर

(जो लागू न हा उसे काट दीजिए)।

Kanpur, 26th July, 1984

Ref. No. A 1750|KNP|83-84.—Whereas, I J. P. Hilori, being the Competent Authority authorised by the Central Government in this behalf under Section 269-B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), hereinafter referred to as the said Act, have reason to believe that immovable property having a fair market value exceeding Rs. 1,00,000 and bearing No...... situated at Moth Saghal Pura Mathura (and more fully described in the schedule below) has been transferred and registered under the registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Mathura the said Act read with rule 48DD of Income-tax rules, 1962 under Registeration No. 5140 dated 19-9-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property by more than fifteen per cent of such

apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the transferor(s) and transferce(s) has, not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer and or;
- (b) facilitating the concealment of any income or any money or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferce for the purposes of the Indian income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 27 of 1957).

Now, therefore in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:

1. Smt. Bhagwan Devi Wo. Ramcharan Das Ro. Mohall Sahgalpura, Mathura.

(Transferor)

2. Laxmi Devi Wo Shri Shri Nivas J1 Ro. Wakigali Mathura.

(Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned.

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the official Gazette or a period of 30 days from the service of the notice on the respective persons whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation.—The terms and expressions used nerein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

SCHEDULE

House property Resident of Moth Sahgalpura Mathura.

Date 26-7-84

Seal

†Strike off where not applicable

निदेश नं 41754 के एन पी/83-84:- प्रतः ससे जे० पी० हिलोरी प्रायकर प्रधिनियमं, 1961 (1961 का 43) जिसे इसके पश्चात् 'उक्त प्रधिनियम' कहा गया है) की धारा 269 ख के प्रधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थायर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 1,00,000 में घधिक है भीर जिसकी सं० 9856 है तथा जो प्रशीगढ़ में स्थित है (बीर इससे उपायद प्रनुसूची में ग्रीर पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिट्रीकर्ता घधिकारी के कार्यांत्र प्रलीगढ़ में, रजिस्ट्रीकरण प्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के प्रधीन तारीच 11-10-83 को

पूर्वोक्त सम्पति के जिसत बाजार मूह्य से कम के वृक्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पति का जिंवत बाजार मूह्य, उसके वृक्यमान प्रतिकल में, ऐसे वृक्यमान प्रतिकल के पन्छह प्रतिशत से प्रधिक है और अन्तरक (अक्तरको) भीर अन्तरिसी (अन्तरियो) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय गाया गया प्रतिकल, निम्नलिखित जिंवयों से युक्त अन्तरण, लिखित में वास्तविक रूप से कथिन नहीं किया गया है।

- (क) अन्तरण से हुई किसी प्राय की बाबत, प्रायकर प्रधितियम, 1961
 (1961 का 43) के प्रधीन कर देने के प्रक्तरक के वायित्य
 में कमी करने या उग्नसं बच्चने में सुविधा के लिए और या
- (ख) ऐसे, किसी घाय या किसी धन या भ्रन्य घास्तियों की जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम 1922 (1522 का 11) या आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) या धन कर घिधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्य घन्तरिती द्वारा प्रकट मही किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिनाने में सुविधा के लिए

म्रतः सब उन्त प्रधिनियम की धारा 269 ग के भ्रनुसरण में, मैं उन्त अधिनियम की धारा 269 घ की उप धारा (1) के प्रधीन, निम्निजित व्यक्तियों प्रयोत:—

- 1. श्री ग्रन्तुल हफंज भ्रन्तुल रक्तफ एव भ्रन्य मुहल्ला चाहगर माया, भलीगढ़ (अस्तरक)
 - 2. श्री संजय कमार जैन प्रशोक कवार जैन निवासी छिपट्टी प्रासीगढ़ (अभारितः)
- 3. श्री/श्रीमती/कृमारी अन्तरिती (बह व्यक्ति, जिसके श्रीधभोग में. सम्पत्ति है)

को यह सूचना जारी करके पूर्विक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां मुक्त करता हू। उक्त सम्पति के क्रर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षीप:-

- (क) इस सूचना के राजपत्न में प्रकाशन की तारी ख से 45 दिन की ध्रविध, या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविध, जो भी अंदिध बाद मैं समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति के द्वारा।
- (ख) इस सूचना के राजपक्ष में प्रकाशन की तारीख के 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्थलि में हितबह किसी धन्य व्यक्ति हार। घ्रधी-हस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकीं।

स्पष्टीकरण:- इसमें प्रयुक्त गब्दों भीर पदी का, जो भागकर मधिनिमम, 1961 (1961 का 43) के भध्याय 20 क में परिभाधित है, वही भर्य होगा जो उस भ्रष्टाय में दिया गया है।

ग्रनुसूची:−

वुकास चौराहा अब्दुल करीम अलीगढ़

तारीखाः 23/7/84

मोहर:

(जो लागू न हो उसे काट वीजिए)

Ref. No. A-1754|KNP|83|84.—Whereas, I J. P. Hilori, being the Competent Authority under section 269-B of the Incometax Act. 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the said Act.), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceding Rs. 1,00,000|- and bearing number AS PER SCHEDULE situated at AS PER SCHEDULE (and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of

the Registering Officer at Kanpur on 11-10-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been trucly stated in the said instrument of transfer with the object of:--

- (a) Facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer, and or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferce for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of section 269-C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of section 269-D of the said Act to the following persons, namely:—

- S|Shri Abdul Hafiz Abdul Rauf & others Mohalla Chaharmaya, Aligarh (Transferor)
- S|Shri Sanjay Kumar Jain
 S|o. Sri Ashok Kumar Jain,
 R|o. Chhipetty, Aligarh. (Transferee)
- S|Shri Sanjay Kumar Jain
 So. Sri Ashok Kumar Jain,
 R|o. Chhipetty, Aligarh. (Persons in occupation of the property)

Objections, if any, to the acquis io_n of the said property may be made in writing to the undersigned:

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Shop at Chauraha Abdul Karim Aligarh.. Date: 23-7-84.

Seal:

निवेण नं० ए-1814/83-84:— श्रतः मुझे जे० पी० हिलीरी, आयकर मिधिनियम, 1961 (1961का 43) जिसे इसके पश्चात् (उक्त प्रधिनियम' कहा गया है) की धारा 269व के प्रधीन सक्षम प्रधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उकिन बाजार 570 GI/84—2

मूल्य 100,000/- से प्रधिक है भीर जिसकी स॰ 22763 है तथा जो जागरा में स्थित है (और इससे उपाबद्ध प्रशुभूची में ग्रीर पूर्ण रूप से वर्णित है), रिजस्ट्रीकर्ता ग्रिकारी के कार्यालय धागरा में, राजिस्ट्रीकरण प्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के ग्रधीन नारीख 10-10-83 को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के वृष्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुझे यह विषयाम करने का कारण है कि पणायूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृष्यमान प्रतिफल गे, ऐसे वृष्यमान प्रतिफल के पन्नह प्रतिशत से ग्रधिक है भीर अन्तरक (प्रन्तरकों) ग्रीर अन्तरिती (अन्तरितयों) के बीच ऐसे बन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखन उदेश्यों से युक्त अन्तरण, निखित में बास्विक रूप से कथित नहीं किया गया है।

- (क) अन्तरण से हुई किसी त्राय की बाबल, प्रायकर प्रवित्तिवम, 1961 (1961 का 43) के प्रधीन कर देने के धन्तरक के वायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए और/या
- (क) ऐसे किसी भाय या किसी भन या भन्य भारितयों की जिन्हें भारतीय भायकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या भायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) या भन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनाय अन्तरित द्वारा प्रकट नही किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए

ग्रतः भ्रव उक्त ग्रिधिनियम की धारा 269म के प्रानुसरण में , मैं उक्त भ्रिधिनियम की धारा 269घ की उपधारा (1) के भ्रधीन, निम्नलिखित व्यक्तियो भ्रभीतः—

- 1. कु॰ पाल व पूर्गावास पुत्र क्याली राम, नि॰ नगला हवेली, मौजा जगन पुर, जिला ग्रागरा (श्रन्तरक)
- 2. एलोरा सहकारी, प्रावास समिति बचिव सुनील श्रन्त गर्ग, विव श्रीम मुजफ्फर खान, प्रागरा (अंग्तरिर्तर)
- श्री/श्रीमती/कृमारी ध्रन्तरक (वह व्यक्ति, जिसके प्रक्रिभोग मैं सम्पत्ति है)

को यह सूचना जारी करके पूर्विक्त सम्पत्ति के प्रजीन के लिख कार्यनिहियाँ भुक करता हूं। उक्त सम्पत्ति के धर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आयोग:-

- (क) इस सूचना के राजपक्ष में प्रकाशन की तारी खासे 4.5 दिन की अधिया मत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की नामील से 30 दिन कि प्रविध, जो भी प्रविध बाद में समाप्त होती हों, के भीतर पृथींकत व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति के द्वारा।
- (च) इस मूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख के 45 दिन के भीतर छक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधीहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकेंगे।

स्परटीकरण:- इसमें प्रयुक्त शन्दों का, जो ग्रायकर ग्रीविनियम, 1961 (1961 को 43) के अध्याय 20क में परिभाषित है, वहीं प्रर्थ होगा जो उस ग्राव्याय में दिया गया है।

भ्रनुसूची

कृषि भूमि नं० 185

तारीख: 24-7-84

मोहर :

(जो लागून हो उसे काट घीजिए)

No. A-1814|83-84.—Whereas I, J. P. Hilori being the Competent Authority authorised by the Central Government in this behalf under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), hereinafter

referred to as the said Act, have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 1,00,000 and bearing land No. 185 situated at Agra (and more fully described in the schedule below) has been transferred and registered under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) office of the Registering Officer at Agra in the under registration No. 22763 dated 10-10-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property by more than fifteen percent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the transferor(s) and transferee(s) has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer and or;
- (b) facilitating the concealment of any income or any money or other assets which have been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957).

Now, therefore in pursuance of Section 269C of the said Act. I hereby initiate proceedings for acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:

 Kunwar Pal and Durga Dass (Transferor) Slo. Khayali Ram Rlo. Nagla Haveli, Mouja Jaganpur. Distt. Agra.

(Transferee)

- Alora Sahkari Avas Samiti Sachin Sunil Chandra Garg Rlo. Bag Muzaffar Khan, Agra
- 3. Shri|Smt. Trr. [Person(s) in occupation of the property].

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:

- (a) by any of the aforcsaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Agricultural Land No. 185. Date 24-7-84

SEAL

*Strike off where not applicable.

निरंण नं० ए/1820/83-84/के एन पी - प्रा. मुझे जे० पी० हिलीरी प्रायकर प्रधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसके प्रश्वात्ः 'उसन प्रधिनियम' कहा गया है) की धारा 269 ख के प्रधीन सक्षन माधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थायर सम्पत्ति, जिसका उचिन बाजार मूल्य 100,000 से प्रधिक है और जिसकी सं० 23003 है तथा जा बसई, आगरा से स्थित हैं (और इससे उपाबद्ध अनुत्वी में और पूर्ण रूप से विणित हैं), रिजिंग्ट्रीकर्सा अधिकारी के भार्यालय आगरा से, रिजिंग्ट्रीकरण प्रिविन्यम 1908 (1908 का 16) के प्रधीन नारीख 19-10-83 को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरिन की गई है और मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापुर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृष्यमान प्रतिफल से ऐसे दृश्यमान प्रतिफल के पखह प्रतिणत से प्रधिक है और अन्तरको (अन्तरको) और अन्तरिन (अन्तरियो) के बीच ऐसे प्रस्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्यों से युवह अन्तरण, लिखित में बाम्नविक रूप से कथित नहीं किया गया है।

- (क) ध्रन्तरण मे हुई किसी ध्रायकी बाबत, ध्रायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के ब्रधीन कर देने के अन्तरक के वायित्व में कमी करने या उसमें बचन में मुविधा के लिए और/या
- (ख) ऐसे किसी भाष या किसी धन या ग्रन्थ भ्रास्तियों की जिन्हें भारतीय भ्रायकर भ्रधिनियम, 1922 (1922 का 11) या भ्रायकर श्रधिनियम, 1961 (1961 का 43) या धन कर भ्रधिनियम, 1957 (1957 क 27) के भ्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा भक्ट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपान में सुविधा के लिए

भ्रतः श्रव उक्त भ्रधिनियम की धारा 269 ग के भ्रनुमरण में, मैं उक्त भ्रधिनियम की धारा 269 ग की उपद्यार्ग (1) के श्रधीन, निम्नलिखित व्यक्तियो अर्थात्:—

- 1. श्रीमिति राम बाई विद्यंशा परनी गनपन लाल पुनिवासी, 10/46 गढ़ क्षेत्र मन्डी, आगरा. ताजगंज, श्रागरा (अन्तरक)
- 2. मे॰ म्राई. टी. सी. लि., विजिनिया हाऊम 37, चौरगी कलकता (धन्तरिती)
- 3. श्री/श्रीमती/कुमारी श्रन्तरिती (वह व्यक्ति, जिसके ग्रिधिभोग में सम्पत्ति है)

को यह सूचना जारी करके पुत्रक्ति सम्पक्ति के ग्रर्जन के लिए कार्यवाहियां गुरू करता हं। उक्त सम्पत्ति के ग्रर्जन के सम्बन्ध में कोई भी ग्राक्षेप:--

- (क) इस सूचना के राजपन्न में प्रकाशन की नारीख से 45 दिन की अविधि, या तरमम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी श्रविध बाद में समाप्त होती हो, के भी-तर पूर्वीवस व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति के द्वारा ।
- (ख) इस सूचना के राजपन्न में प्रकाशन की तारीख के 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितवह किसी अस्य व्यक्ति होता प्रधोहनाक्षरी के पास विखित में किए जा सकेंगे।

स्पष्टीकरण:- धरमें प्रयुक्त णब्दां भीर पदो का, जो स्नायकर स्रधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अध्याय 20 कमें परिभाषित है, वही सर्थ होंगा जो उस सध्याय में दिया गया है।

श्रम् सुची:-

प्लाट नं० 888-890 बसई, नाजगंज, आगरा

नारीख: 23/7/84

मोहरः

(जो लक्ष्यून हो उसे काटदीजिए)

Ref. No. A-1820[83-84.—Whereas I, J. P. Hilori being the Competent Authority under section 269-B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as said Act), have reason believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 100,000 and bearing number AS PER SCHEDULE situated at AS PER SCHE-DULE (and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Agra on 19-10-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object

- (a) Facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer, and or
- (b) Facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferce for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of section 269-C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of section 269-D of the said Act to the following persons, namely:—

- Smt. Ram Bai W|o. Ganpat Lal R|o 10|46, Gadhai Mandi, Taj Ganj, Agra. (Transferor)
- Mls. I.T.C. Ltd., Virginia House, 37, Chauranghee, Calcutta.

(Transferce)

3. As in above (1) Transferor

(Persons in occupation of the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette of a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said

Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Plot No. 888-890,

Basai, Taj Ganj, Agra.

Date: 23-7-1984.

Seal:

Strike off where not applicable.

निदेश न० ए-1821/83-84: -अत. मुझे जे० पी० हिलांगे, आयकर अधितियम, 1961(1961 का 431(जिसे इनके प्रभात 'उक्त अधितियम' कहा गया है) की धारा 269ज ने अधीन मक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थायर सम्पत्ति जिसका उचित बाजार मृन्य 1,00,000/- से अधिक हैं और जिमकी मं० 55,243,250 तथा जो ग्राम शाहजालपुर शिकोहाबाद में स्थित हैं (और इससे उपायध अनुसूची में अमें अप पूर्ण क्य से बाँगत हैं), रिजि-ट्रोकती अधिकारी के कार्याचय शिकोहाबाद में, रिजि-स्ट्रांकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन तारीख 10-10-83 को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मृन्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुझे यह विश्वाम करने का कारण है कि ययापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मृन्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल में, ऐसे दृश्यमान प्रतिफल के पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है अन्तरक (अन्तरको) और अन्तरित (अन्तरियो) के बीच ऐसे अन्तरण के किए तथ प्रया गया प्रतिफल, निम्निलिखत उद्देण्यों से युक्त अन्तरण, लिखित में वास्तिक रूप में काथत नहीं किय। गया है।

- (क) अन्तरण में हुई किसी आय की बाबत, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अधीन कर देने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में मुविधा के लिए और/पा
- (ख) ऐसे किसी भाय शा किसी धन या अन्य आस्तियों की जिन्हें आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या आयकर अधिनियम, 1961 (1961 क 43) या धन कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिति द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में भूविधा के लिए

अतः अब उक्त अधिनियम की धार। 260ग के अनुसरण में, मैं उक्त अधिनियम की घारा 269ग की उप धारा (1) के अधीन, निम्नलिखिन व्यक्तियों अर्थाण .-

- श्री जप्रवीर सिंह व राम जी लाल (अन्तरक) पुत्र बाबू राम यादव नि० मु० कटरा मीरा णिकोहाबाद जिला मैनपुरी
- 2 श्री ,डनाम 'सिह, अध्यक्ष (अल्लरिनो) आदर्ण सहकारी गृष्ट निर्माण समिति नि० कटरा मीरा, णिकोहाबाद जि० मैनपुरी

का यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पति के अर्भन के लिए कार्यवाहियां एक करता हूं। उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाणन की तारीख़ से 45 दिन की अविधि, मा तत्मम्बन्धी व्यक्तियों पर मूचना की तामील 30 की अविधि जो भी अविधि खाद में समाप्त होनी हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति के द्वार, ।
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की नारीख के 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हिनबद्ध किसी अस्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकेंगे।

स्पष्टीकरण .- इसमे प्रयुक्त शब्दो और पदो का, जो आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अध्याय 20के में परिभाषित है, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

खोती की जमीन

3 জ্বলেন০ 55/2-20 জি০ শ 243/1-21 জি০ শ 250/6-58

ग्राम सह जलपुर तह्० शिकोहिंगाय जिलामैनपुरी

तारीख : 26-7-84

माहर

[जा लागू न हो उसे काट दीजिए]

Ref. No. A-1821 83-84.—Whereas, I, J. P. Hilori being the Competent Authority authorised by the Central Government in this behalf under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), hereinafter referred to as the said Act, have reason to believe that immovable property having a fair market value exceeding Rs. 1,00,000|- and bearing No. 55,243,250 situated at Sahjalpur Shekohabad (and more fully described in the schedule below) has been transferred an dregistered under the Registration Act 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Shikohabad under registration No. 38703 dated 10-10-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the transferor(s) and transferee(s) has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer and or.
- (b) facilitating the concealment of any income or any money or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957).

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:

- 1. Shri Jaiveer Singh & Ramji Lal Slo. Babu Ram Yadav Rlo. Moh-Katra Meera Shikohabad Distt-Mainpuri. (Transferor)
- Shri Inam Singh Adyaksha Adarsh Sahkari Grih Nirman Samiti R|o Katra Meera Shikohabad Mainpuri. (Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned.

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the official Gazette or a period of 30 days from the service of the notice on the respective persons whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

SCHEDULE

Agriculture Land & Land No. 55|2-20 D. & 243|1-21 D. & 250|6-58, Village Sahjalpur Teh. Shikohabad Distt. Mainpuri.

Date: 26-7-84

SEAL

Strike off where not applicable.

निर्देण न० के-386 किएनपी/83-84 -अत सुक्षे जे० पी० हीलोरी, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसके पश्चात 'उक्त अधिनियम' कहा गया है) की धारा 269 ख के अधीन मक्षम प्राधिकारी को यह किण्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचिन बाजार मृत्य 1,00,000 से अधिक है और जिसकी सं० 20,391 है तथा जो कानपुर में स्थित है (और इससे उपाबद अनुसूची में और पूर्ण कप में वर्णित है) रिजस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय कानपुर में, रिजस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन तारीख 10-10-83 को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचिन बाजार मृत्य से कम के दृश्यमान प्रतिकत्त के लिए अन्तरित की गई है और मुझे यह निष्याम करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उक्तिन बाजार मृत्य, उसके वृष्यमान प्रतिकत्त के लिए अन्तरित की गई है और मुझे यह निष्याम करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उक्तिन बाजार मृत्य, उसके वृष्यमान प्रतिकत्त से, ऐसे वृष्यमान प्रतिकत्त ने पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है अन्तरक (अन्तरको) और अन्तरित्ती (अन्तरियो) के वीच ऐसे अन्तरण के लिए तथ पाया गया प्रतिकल, निम्नालिक्त उद्देश्यों से युक्त अन्तरण, लिखित में वास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है।

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की प्रावत, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अधीन कर देने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने मा उससे बचने में सुविधा के लिए और/मा
- (का) ऐसे किसी आय या किसीधनया अन्य अिम्मयों की जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) या धन कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने मे मुनिधा के लिए

अतः अब उन्त अधिनियम की धारा 269ग के अनुसरण मे, मैं उन्त अधिनियम की धारा 269 ग की उपधारा (1) के अधीन निम्नर्लिखत व्यक्तियों अर्थात् .

श्री किशान साल, पुत्र श्री केसर मल, (अन्तरक)
 126/जी/57, गोविन्द नगर, कानपुर

े श्री जगजीत सिंह एवं अन्य (अन्तरिती) पुत्रमण से पुरुषक्म सिंह, 12/5, ब्लाक न .2, गाँविन्य नगर, कानपुर

3 श्री/श्रीमती/कुमारी अन्तरिती (तह व्यक्ति, जिसके अधिभाग में सम्पत्ति है)

का यह मूचना आरी करके पूर्वोक्त सम्पति के अर्जन के लिए कार्यवाहिया सुरू करता ह। उक्त सम्पति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षीप:-

- (क) इस सूचना के राजपत में प्रकाशन की तारीय में 15 दिन की अवधि, या लन्मम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की नामील 30 दिन की अनिध, जो भी अवधि बाद में गमाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति के हारा ।
- (खा) इस सूचना के राजपन्न में प्रकाशन की सारीखा के 45 दिन के भीतर अकत स्थावर समानि ये हिराबाद किसी अन्य व्यक्ति द्वार, क्योहरूनाक्षार के पास लिखित में किए जा सकेंगे।

स्पार्धिकरण - १समं प्रयुक्त मध्यों और पद्दों का, जो आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अध्याय 20क में परिभाषित है, वही अर्ज होगा जो उसे अध्याय में दिया गया है।

अनु सूची

जायदाद न० 120-G/57-ए गांथिन्द मनर, कानपुर

वारीख . ३४ ८४४

माहर

[जा लागून हा उसे काट दाजिए]

Ref. No. K-386|KNP|83-84 :--Whereas, 1 J. P. Hilori being the Competent Authority authorised by tne Central Government in this behalf under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), herein-after referred to as the said Act, have reason to believe that immovable property having a fair market value exceeding Rs. 1,00,000 and bearing No. 126-G 57A situated at Govind Nagar, Kanpur, (and more fully described in the schedule below) has been transferred and registered under the registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Kanpur under registration No. 20231 dated 10-10-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the transferor(s) and transferee(s) has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer and/or;
- (b) facilitating the concealment of any income or any money or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957).

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:

- 1. Shri Kishan Lal, So Shri Kesarmal, 126G 57, Govind Nagar, Kanpur. (Transferor)
- Shri S. Jagjit Singh and others sons of S. Gurbux Singh, 12|5, Block No. 2, Govind Nagar, Kaupur. (Transferee)
- 3. Shri/Smt. S. Jagjit Singh and others Sons of S. Gurbux Singh 12/5, Block No. 2, Govind Nagar, Kanpur. (Persons (s) in occupation of the property).

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned.

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the official Gazette or a period of 30 days from the service of the notice on the respective persons whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

SCHEDULE

Property No. 126|G|57-A, Govind Nagar Kanpur

Date: 23-7-84

SEAL

Strike off where not applicable.

निरंण न के 392/83-84: -अन मुझे जे. पी हिलोरी, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसके परनान 'उनन अधिनियम' कहा गया है) की धारा 269 ख के अधीन मधम प्राधिकारी को यह विण्याप करने के कारण हैं कि स्थावर सम्पति जिसका उचिन बाजार मूल्य 25,000/~ से अधिक है और जिसकी सं० 21111ई तथा जो कानपुर स्थित है (और इससे उपावच अनुसूची मे और पूर्ण कप से विणित है), रिजस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय कानपुर में, रिजस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन तारीख 27-10-83 को पूर्वोक्त सम्पति के उचिन बाजार मूल्य से कम के वृष्यामान प्रतिफल के लिए अन्तरित को गई है और मुझे यह विष्यास करने का कारण है कि यथोपूर्वोक्त सम्पति का उचिन बाजार मूल्य, उसके दृष्यमान प्रतिफल से, ऐसे दृष्यमान प्रतिफल के पन्च प्रतिकार से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरित (अन्तरियों) के बीव ऐसे अन्तरण के लिए नय पाया गया प्रतिफल, निस्तालिय उद्देषयों में युका अन्तरण, लिखित में वास्तविक रूप में कथिन नहीं किया गया है।

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, आयक्त अधिनियम, 1961(1961 का 43) के अधीन कर देने के अम्बरक के वायित्व में कमी करने या उसमें धचने में सुविधा के लिए और/या
- (ख) ऐंसे किसी आय या किसा धन या अन्य आस्तियों की जिन्हें भारतीय आयक्तर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) साधनकर

अधिनियम 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरियों बारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपान में सुविधा के लिए

अत. अब उक्त अधिनियम की धारा 269 गर्क अनुनरण में, भे उक्त अधिनियम की धारा 269 घ की उपधारा (1) के अधी।, निम्नलिखित व्यक्तियों अर्थात .-

- 1 श्री चितरजन प्रसाद मगल (अग्रवाल) (अन्सरक) पुत्र श्री राम प्रमाद भगल
- नि 128/116, ईो० ब्लाक, किदवई नगर, कानपुर
- 2 श्री नथल किशोर, (अन्तरिती) नि. 61 h/90, किछयाना मोहाल, कानपुर
- 3 श्रां/श्रीमती/कृषाणे अन्तरिती (यह व्यक्ति, जिसके अधिभाग में सम्पत्ति है) का यह स्वाना जारी करके पूर्वोक्त सम्पति के अर्जन के लिए कार्यवाहिया मण्ड करना हु। उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कार्ड भी आक्षेप .-
 - (क) एम मूचना के राजपन्न में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अवधि, या तत्मम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की नामील में 30 दिन की अवधि, जो भी अवधि बाद में समाप्त हाती हो, के भीतर पूर्वीकत व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति के द्वारा ।
 - (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाणन की तारीख के 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर गम्मति में हिनबक्क किसी अन्य व्यक्ति हारा अधीहस्नाक्षरी के मान विख्यित में किए जा सकेंगे।

स्पष्टीकरण .- इसमें प्रयुक्त मन्दों और पदों का, जो आगकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अध्याय 23 क में परिमाणित है, वहीं अर्थ होगा जो उस अस्याय में दिया गया है।

अनुमुची

मकान न . 128/116, बी ब्लाक, कियमई नगर, कानपुर

सारीखा . 23-7-81

मोहर

[जा लागु न हो उसे काट दीजिए]

Ref No. K-392|83-84:—Whereas I, J. P. Hilori being the Competent Authority under section 269-B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the said Act,), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000 and bearing number as per schedule situated at as per schedule (and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Kanpur on 27-10-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

(a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer and or, (b) facilitating the concealment of any income or any money or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957).

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:

 Shri Chitranjan Pd. Mangal (Aggarwal) S/o Shri Ram Pd. Mangal, R|o 128|116, D-Block Kidwai Nagar, Kanpur.

(Transferor)

- 2. Shri Naval Kishore, R|o 616|90, Kachhiyana Mohal, Kanpur.' (Transferce)
- 3. Shri Nayal Kishore, R|o 616|90, Kachhiyana Mohal, Kanpur (Persons in occupation of the property).

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned.

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the official Gazette or a period of 30 days from the service of the notice on the respective persons whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

SCHEDULE

H. No. 128/116, B-Block, Kidwai Nagar Kanpur.

Dated: 23-7-84

Seal:

निदेण नं के-102/कानप्र/83-84:—प्रात मूले जे पी हिन्तीरी आयकर प्रधिनियम 1961 (1961 का 43) (जिसे इसके पण्यात 'उक्त प्रधिनियम' कहा गया है) की धारा 269का के प्रधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति जिसका उचित बाजार मृल्य 1,00,000/- से प्रधिक है भीर जिसकी मं० 21143 है तथा जो कानपुर में स्थित है (भीर इससे सम्बद्ध उपाबद्ध भनुसूची में भीर पूर्ण रूप से बणित है) रिजस्ट्रीकर्ता भ्रधिकारी के कार्यालय कानपुर में रिजस्ट्रीकरण श्रधितियम 1908 (1908 का 16) के श्रधीन तारीच 11-11-83 को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मृल्य से कम के ब्रुग्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है भीर मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापुर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मृल्य उसके वृश्यमान प्रतिफल से एंस वृश्यमान प्रतिफल के पन्द्रह प्रतिणत से भ्रधिक है भ्रन्तरक (अन्तरिकों) और अन्तरिती (श्रन्तरियों) के बीच ऐसे भ्रन्तरण के लिए

तय पाया गया प्रतिकल जिल्लानिखित अधेरया पे युक्त ग्रन्तरण, लिश्रित में बास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है।

- (क) अन्तरण से हुई किया पायका बाबत श्रायकर श्रधिनियम, 1961 (1961 का 43) के श्रधीन कर देने के श्रन्तरक क दायित्व में कभी करने या उसने अचने में मुनिधा के लिए श्रीर/या
- (ग्रा) ऐसे किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तिया की जिन्हें भारतीय भागकर अधिनियम 1922 (1922 का 11) या आयकर अधिनियम 1961 (1961 का 13) या धन-कर अधिनियम 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती हारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए

श्रतः श्रव उक्त श्रिधिनियम की धारा 269ग के श्रनुसरण में मै उक्त श्रिधिनियम की धारा 269ग की उप धारा (1) के श्रधीन निम्नलिखित ठाकितयों श्रामीन :--

- शो चन्द्रिका प्रसाद पुत्र श्री माह्नलाल (ग्रन्तरक) णुक्ल नि ल्लाइट हाउम यणावा नगर कानगुर
- 2 टीचर्स हाउसिंग कोग्रागरेटिय (ग्रन्तिश्ति) मोसाइटी 77/1-ए, हानसी गेंड कानपुर द्वाराश्री कृपा गंकर सेंगर सचिव
- 3 श्री श्रीमर्ता/कृमार्गः......ग्रन्तरिती (वह व्यक्ति, जिन केश्रीधभाग में सम्पत्ति है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वाक्त नम्पत्ति के धर्जन के लिए कार्य-वाहियां मुख्य करना हूं। उक्त सम्पत्ति के धर्जन के सम्बन्ध से कोई भो धाक्षेप:---

- (क) इस सूचना के राजपत्र मे प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की श्रविध, या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील 30 दिन की श्रविध जो भी श्रविध बाद में समाप्त हाती हा, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी ब्यक्ति के द्वारा।
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख़ के 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पति में हितबद्धा किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधात्रस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकेंगे।
- स्पट्टीकरण:--इसमे प्रयुक्त ग्रन्था और पदों का जो भायकर अधि-नियम, 1961 (1961 का 43) के भ्रष्ट्याय 20क मे परिमाधित है, नहीं अर्थ होगा जो उस श्रध्याय में दिया गया है।

भन्सूची

खेती न 61,62.63 एवं 36 स्थित नौबम्ता, पर व जिला कानपूर नारीख: 23-7-84

माध्र.

(जो लागून हो उसे काट दीजिए)

 the registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Kanpur under registration No. 21143 dated 11-11-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the transferor(s) and transferec(s) has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer and or,
- (b) facilitating the concealment of any income or any money or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957).

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:

- Shri Chandrika Prasad, So Shri Mohan Lal Shukla, Ro White House, Yasoda Nagar, Kanpur. (Transferor)
- 2. Teacher Housing Co-op. Society Ltd., 77-1-A Halsi Road, Kanpur, Through Sri Kirpa Shankar Sengar, Secy.

(Transferee)

3. Teachers Housing Co-op. Society Ltd., 77|1-A, Halsi Road, Kanpur, Through Sri Kirpa Shanker Sengar, Secy. Person(s) in occupation of the property).

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned.

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the official Gazette or a period of 30 days from the service of the notice on the respective persons whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

SCHEDULE

Land Nos. 61, 62, 63 & 36 at Naubasta, Parg. & Distt. Kanpur.

Date: 23-7-84

SEAL

Strike off where not applicable,

क(नप्र, 26 जन्म_ाई, 1084

निर्देश त० एस-2/84-85 -- अन मुझे जे०पी० हिलोगी अत्यक्तर अविनियम 1961 (1961 का 13) (जिसे इसके पश्चात् 'उन्त अधिन्यम' कहा गया है) की धारा 269ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वाय करने का कारण है कि स्थायर सम्पत्ति जिसका उकिन वाजार मूल्य 1,00,000/- से अधिक है और जिसकी स० 4087 है तथा जो सा० भूडा मे स्थित है (और इससे उपावद्ध धनुसची म और पूर्ण रूप से वर्णित है) रिजस्ट्रीकर्ता प्रधिकारी के कार्यालय दावरी में रिजस्ट्रीकरण प्रधिनियम 1908 (1908 का 16) के अधीन नारीख 7-10-83 को पूर्वाक्त सम्पत्ति के उवित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिकृत के लिए अस्तरित सम्पत्ति को उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिकृत के स्वाप्तृष्टीकृत सम्पत्ति को उचित बाजार मूल्य उसके दृश्यमान प्रतिकृत के स्वाप्तृष्टीकृत सम्पत्ति को उचित बाजार मृल्य उसके दृश्यमान प्रतिकृत से, ऐसे दृश्यमान प्रतिकृत के सन्दृष्ट प्रतिकृत से अधिक है अस्तरक (अन्तरको) और अन्तरिती (अन्तरियो) के बाज ऐसे अर्द्तरण के लिए नय पाया ग्रा प्रतिकृत निम्तर्गिवा उद्देश्यों से युक्त अन्तरण, लिखित में वास्तिक का से क्षित नहीं किया गया है।

- (क) प्रन्तरग में हुई किमो श्राय की बाबन, श्रायकर प्रधिनियम, 1961 (1961 का 43) के प्रधीन कर देने के प्रन्तरक के वासिन्व में कमी करन या उसरी यवने में मुविधा के लिए भीर/या
- (ख) ऐने किसी ग्राय या किसी धन या ग्रन्थ ग्रास्तियों की जिन्हें भारतीय ग्रायकर ग्रिशियम, 1922 (1922 का 11) या ग्रायकर ग्रिशित्यम, 1961 (1961 का 43) या धन-कर ग्रिशित्यम 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थं प्रन्तिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना नाहिए था छिपाने में मुनिधा के निए

भ्रतः भ्रव उक्त भ्रधिनियम की धारा 269ग के भ्रनुसरण में मैं उक्त ग्रिधिनियम की भारा 269ग की उप धारा (1) के ग्रधीन, निस्न-लिखित व्यक्तियों भ्रथीतु:—-

- श्रीमती कलावती बेवा, श्री नत्थू सिह (भ्रन्तरक) नि० भृड़ा, घा वरौला, जिता गाजियाबाद.
- श्री हरकेश, फाल्र पुत्र संरती (श्रन्तरिती) नि० भूषा, डा० बरौला-प्र० व० ता० वादरी जिला---गाजियाश्वाद ।

को यह सूचना जारी करने पूर्वोक्त सम्पत्ति के प्रर्शन के लिए कार्य-वाहिया गुरू करना हं। उक्त सम्पत्ति के धर्जन के सम्बन्ध मे कोई भी ग्राक्षेप ---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की श्रविधि, या तन्मम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील 30 दिन की श्रविधि, जो भी श्रविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतेंग पूर्वीकत व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति के द्वारा।
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख़ के 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर संस्पत्ति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति ज्ञारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकेंगे।
- स्पष्टीकरण '--इसमं प्रयुक्त शब्दो भीर पदों का, जो आयकर प्रधि-नियम, 1961 (1961 का 43) के प्रध्याय 20क में परिभाषित है वहीं प्रयं होंगा जो उस प्रध्याय में दिया गया है।

भन्सूची

स्वासा न० 37 ग्रा० भृडाजिला गाजियाकाद

तारीख 26-7-84

मोहर:

(जो सागुन हो उसे काट बीजिए)

Kanpur, the 26th July, 1984

Ref. No. M-2/84-85.—Whereas, I, J. P. Hilori being the Competent Authority authorised by the Central Government in this behalf under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), hereinafter referred to as the said Act, have reason to believe that immovable property having a fair market value exceeding Rs. 1,00,000 and bearing No. situated at Village Bhoda (and more fully described in the schedule below) has been transferred and registered under the registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registration Officer at Dadri under registration No. 4087 dated 7-10-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property by more than fifteen percent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the transferor(s) and transferee (s) has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:

- (a) facilitating the reduction of evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer and or.
- (b) facilitating the concealment of any income or any money or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian income-tax Act. 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957).

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:

 Shrimati Kalawati Bewa Shri Nathu Singh Vill. Bhoda Distt. Ghaziabad.

(Transferee)

 Shri Harkesh, Kaloo S/o Sarni P.O. Barola Distt. Ghaziabad.

(Transferce)

3. Shri Harkesh, Kaloo Slo Sarni Village-Bhoda Post Barola Distt, Ghaziabad. Person(s) in occupation of the property).

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned.

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the official Gazette or a period of 30 days from the service of the notice on the respective persons whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Khata No. 37 Village-Bhoda, Distt, Ghaziabad.

Date: 26-7-84

SEAL

Strike off where not applicable.

निदेण न० एस-10 ९/ ४४-४५ --यन मुझे जे०पी० हिलोरी, प्रायकर प्रिधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसके पण्चान् 'उक्त प्रिधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसके पण्चान् 'उक्त प्रिधिनियम' कहा गया हैं) की प्यारा 269क के प्रधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विक्वास करने का नारण है कि स्थायर सम्पत्ति जिसका उचिन प्राजार मृन्य 1,00,000/- मे प्रधिक है प्रीर जिसकी स० 7708 है तथा जो सोहजनी मे स्थित हैं (प्रोर इसरो उपावद सनुगची म श्रीर पूर्ण क्ष्य से वर्णित हैं) रिजस्ट्रीकर्ना अधिकारी के कार्यालय बुद्धाना में, रिजस्ट्रीकरण प्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के प्रधीन तारीख 5-10-83 को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचिन बाजार मूल्य से काम के दृष्यमान प्रतिकत के निए प्रन्तरित की गई है भ्रीर मुझे यह विक्वाम करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचिन बाजार मूल्य, उसके दृष्यमान प्रतिकत से ऐसे दृष्यमान प्रतिकत के परदृह प्रतिकत से प्रधिक है प्रस्तरको भ्रीर प्रकारनी (प्रस्तरियों) के बीच ऐसे भ्रनारण के लिए तय पाया गया प्रतिकत, निम्निविवत उद्देश्यों से युक्त भ्रतरण, लिखन मे वास्त्रिक हम से कथिन नहीं किया गया है।

- (क) घल्तरण से हुई किसी श्राप की बाबत, आयकर श्रिधितियम, 1961 (1961 का 43) के श्रधीन कर देने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उसमें अचने से मुविधा के लिए भौर/या
- (ख) ऐसे किसी आय या किसी धन या अस्य आस्तियो की जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) या धनकर अधिनियम 1957 (1957 का 27) के 'प्रयोजनार्थ अस्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था छिपाने में सुविशा के लिए

भ्रत अब उक्त श्रिधिनियम की धारा 269ग के भ्रनुसरण में, मैं -उक्त भ्रिधिनियम की धारा 269ग की उप द्यारा (1) के श्रिधीन, निस्त लिखित व्यक्तियों, भ्रार्थात —

श्री भदन पाल अमरपाल पुत्र सुगत चंद
 नि॰ शाकधर—सोहजनी, प्र० शिकारपुर

, जि॰ बुढाना

(ग्रस्तरक)

2 श्री सोहतवीर सिंह व क्रजपाल सिंह ग्रादि पुत्र सगवा मिह पोस्ट व ग्रा०--सोहजती

प्० शिकारपुर

बहाना

(अन्यरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वीक्त संस्पत्ति के झर्जन के लिए कार्ध-वाहियां गुरू करता हूं। उक्त सस्पत्ति के झर्जन के सम्बन्ध से कोई भी भाक्षेप :--

- (क) इस सूचना के राजपन्न मे प्रकाशन की नारीख से 45 दिन की ध्रविध, या तत्स्य कियानियों पर सूचना की नासील 30 दिल की ध्रविध जो भी अविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीकर व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति के द्वारा।
- (आ) इस सूचना के राजपन्न मे प्रकाशन की नारीचा के 45 दिन के भीनर उक्त स्थावर सम्पत्ति मे हिनबाद किसी ग्रन्थ व्यक्ति ग्रारा आधीहरनाक्षरी के पास निश्चित मे किए जा सकेंगे।

स्पष्टीकरण --इनमें प्रयुक्त शब्दों भीर पदों का, जो भावकर भिक्ष-नियम, 1961 (1961 का 43) क श्रद्धाय 20क में परिभाषित है, वहीं श्रयं होगा जो उस श्रद्धाय म वियागया है।

धन्युषी

स्थित पाठ-मोहजनी, शिकारपूर, बहुाना

नारी**च** 26-7- ४4

मोहर:

[जालागुन हो उसे काट वीजिए]

Ref. No. M-108/84-85.—Whereas I, J. P. Hillori, being the Competent Authority authorised by the Central Government in this behalf under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), hereinafter referred to as the said Act, have reason to beheve that immovable property having a fair market value exceeding Rs. 1,00,000 and bearing No....... situated at Sohjani (and more fully described in the schedule below) has been transferred and registered under the registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Buddana under registration No. 7708 dated 5-10-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the transferor (s) and transferee (s) has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer and or;
- (b) facilitating the concealment of any income or any money or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferce for the purposes of the Indian income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957.)

Now, therefore in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

 Shri Madan Pal, Amar Pal Soo Sugan Chand Roo Post & Village-Sohjani Buddana-Distt. Muzaffar Nagar.

(Transferor)

 Shri Sohan Vir Singh, Barj Pal Singh S/o Sagwa Singh Village & Post-Sohjani Buddana Distt. Muzaffar Nagar.

(Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned.

(a) by any of the aforesaid within a period of 45 days from the date of publication of this

notice in the official Gazette or a period of 30 days from the service of the notice on the respective persons whichever period expires later.

(b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Village-Sohjani Khatta No. 464 Buddava Muzaffar Nagar

Date: 26-7-84

Seal:

Strike off where not applicable.

निवेश नं० एम-120/84-85: -- प्रातः मुझे, जै०पी० हिलोरी, प्रायकर प्रिविनयम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसके पश्चात् 'उनत प्रिधिनयम' कहा गया है) की धारा 269क के प्रधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विप्रवास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मृख्य 1,00,000/- से प्रियक है और जिसकी सं० 4129 है तका जो हसनपुर भोवापुर में स्थित है (ग्रीर इससे उपावश्व प्रमुसूची में भीर पूर्ण कप से विणत है), रजिस्ट्रीकर्ता प्रधिकारी के कार्यालय वावरी में, रजिस्ट्रीकरण प्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के प्रधीन तारीख 4-10-83 को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मृख्य से कम के वृष्यमान प्रतिफल के लिए प्रन्तरित की गई है और मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मृख्य, उसके वृष्यमान प्रतिफल से, ऐसे वृष्यमान प्रतिफल के पन्तरित (धन्तरियों) के बीच ऐसे प्रन्तरण के सम्पत्तरक (धन्तरकों) भीर प्रन्तरिती (धन्तरियों) के बीच ऐसे प्रन्तरण के लिए सय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्यों से युक्त प्रन्तरण, लिखित से बास्तिक रूप से कथित नहीं किया गया है।

- (क) भन्तरण से हुई किसी आय की बाबन, आयकर आधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अधीन कर देने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए और/या
- (च) ऐसे किसी माय या किसी धन या मन्य मास्तियों की जिन्हें भारतीय मायकर मधिनियम, 1922 (1922 का 11) या भायकर भिर्मियम 1961 (1961 का 43) या धन-कर मधिनियम 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ मन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था। छिपाने में सुविधा के लिए

 श्रतः प्रव उन्त अधिनियम की धार। 269ग के प्रनुसरण में, मैं उन्त प्रधिनियम की धारा 269ग की उप धारा (1) के प्रधीन, निम्निलिखत व्यक्तियों प्रशीत्:—

- श्री महर चंद, खजान पुत्र श्री तेजा
 चिल्ला राम, रामिकशन पुत्र श्री नैन सिंह
 प्रा० हसन पुर भोबापुर
 पो० लोनी—वादरी— गाजियाबाव
- श्री गोपाल दत्त पुत्न बच्ची राम निवासी -- एफ 12 विजय श्रीक लक्ष्मी नगर विस्ती -- 82 (प्रश्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त मन्यत्ति के धर्जन के लिए कार्यवाहियां शुक्त करता हूं। उक्त सम्यत्ति के धर्जन के सम्बन्ध में कोई भी धाक्षेप:—

- (क) इस सूचना के राजपन्न में प्रकाशन की तारी का से 45 दिन की भवित, या तरसम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील 30 दिन की श्रविध, जो भी भविध बाद में समान्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति के द्वारा।
- (अर) इस सूचना के राजपन्न में प्रकाशन की तारीख में 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हिनबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जासकेंगे।

स्पण्टीकरण:—इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो घायकर घधि-नियम, 1961 (1961 का 43) के घष्ट्याय 20क में परिभाषित है, बही घर्ष होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

मनुसूची

बाता नं ० 153 बसरा न ० 175 ग्रा० हमनपुर भोबापुर

तारीख 26-7-84

मोहर: ़

(जो लागून हा उसे काट वीजिए)

Ref. No. M-120/84-85.—Whereas I, J. P. Hilori, being the Competent Authority authorised by the Central Government in this behalf under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), hereinafter referred to as the said Act, have reason to believe that immovable property having a fair-market value exceeding Rs. 1,00,000 and bearing No..... situated at Hasanpur, Bhawapur (and more fully described in the schedule below) has been transferred and registered under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Dadri under registration No. 4129 dated 4-10-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the transferor(s) and transferee(s) has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer and or;
- (b) facilitating the concealment of any income or any money or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957.)

Now, therefore in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for acquisition of the aforesaid property by the issue or this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

 Shri Mohar Chand, Khajan Slo Sri Teja, Chinta Ram Slo Sri Nain Singh Rlo Hasanpur, Bhawapur Post-Loni Dodri, Distt. Ghaziabad.

(Transferor)

2. Shri Gopal Dutt S|o Bachi Ram R|o F-12, Vijai Chowk Laxmi Nagar Delhi-92

(Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned.

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the official Gazette or a period of 30 days from the service of the notice on the respective persons whichever period expires later.
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that chapter.

THE SCHEDULE

Khata No. 153 Khasra No. 175 Village-Hasanpur Bhawapur.

Date: 26-7-84

Seal:

Strike off where not applicable.

निदेश मं॰ एम-1481/83-84:--अतः मुझे जे॰पी॰ हिलोरी, झायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसके पण्चात् 'उक्त अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसके पण्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है) की झारा 269क के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वाम करने का कारण है कि स्थावर सस्पत्ति जिसका उचित बाजार मूल्य 1,00,000 से अधिक है और जिसकी मं० 7188 है तथा जो कुतुब-पुर में स्थित है (और इससे उपाइद अनुसूची में और पूर्ण कय से बणित है), रिजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय खुनन्त्रणहर में, रिजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के आधीन तारीका 21-9-83 को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य में कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिये अन्तरित की गई है और मुझे यह विश्वाम करने का कारण है कि यथा-पूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, ऐसे दृश्यमान प्रतिफल के पण्यह प्रतिशत से अधिक है अन्तरक (अन्तरकों) और अक्तरिती (अन्तरियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्निचित उद्देश्यों से युक्त अक्तरण, लिखित में वास्तिवक रूप से कथित महीं किया गया है।

- (क) अम्लरण से हुई किसी भाय की बाबस, आपकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अधीन कर देने के अम्लरक के दायित्व में कभी करने गाउमसे बचने में मुविधा के लिए और/या
- (ख) ऐसे किसी माय या किसी धन या मन्य मास्तियों की जिन्हें भारतीय मायकर मिधिनियम, 1922 (1922 का 11) या मायकर मिधिनियम, 1961 (1961 का 43) या धनकर मिधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनाय मन्तिरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा कें लिए

भतः मब उक्त प्रधिनियम की धारा 269ग के मनुसरण में, मैं उक्त भिष्ठिनियम की धारा 269ग की उप धारा (1) के भ्रधीन, निम्नलिखित ध्यक्तियों भ्रथित:—

 श्री मैक्सिंह पुक्ष हेतराम ग्रा० कुंतुबपुर पो० ग्र० शिकारपुर जिला समन्दशहर

(म्रन्तरक)

 श्रीमती सत्तवीरी देवी पस्ती क्षयंबू ग्रा० कृतुबयुर, पो०प्र० शिकारपुर जि० ब्लन्दशहर

(भन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के धर्जन के लिए कार्य-वाहियां शुक्त करता है। उक्त सम्पत्ति के धर्जन के सम्बन्ध में कोई भी धाक्षेप:--

- (क) इस सूचना के राजपन्न में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की प्रविध, या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील 30 दिन की प्रविध, जो भी भवधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति के द्वारा।
- (ख) इस सूचना के राजपत्न में प्रकाशन की तारीखा के 45 दिन के भीनर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद्ध किसी पन्य व्यक्ति द्वारा प्राचीहस्ताक्षरों के पास लिखिन में किए जा सकेंगे।

स्पष्टीकरण:---इसमें प्रयुक्त गन्दों भीर पर्वो का, जो भायकर मधि-नियम, 1961 (1961 का 43) के भ्रष्टयाय 20क मे परिभाषित है, वहीं भर्ष होगा जो उस भ्रष्ट्याय में दिया गया है।

भनुसूची,

स्थित खाता नं ० 286 कुतुबपुर, प्रो० प्र० शिकारपुर, जिला खुलन्वशहुर

तारीख: 26-7-84

मोहर

(जा लागून हाउसे काट बीजिए)

Ref No. M-1481 83-84 :--- Whereas I J. P. Hilori being the Competent Authority authorised by the Central Government in this behalf under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), hereinafter referred to as the said Act, have reason to believe that immovable property having o fair market value exceeding Rs. 1,00,000 and bearing No..... situated at Kutubpur (and more fully described in the schedule below) has transferred and been registered under the registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Bulandshahar under registration No. 7188 dated 21-9-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the transferor (s) and transferee (s) has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer and or;
- (b) facilitating the concealment of any income or any money or other assets which have not been or which ought to be disclosed by

the transferee for the purposes of the Indian income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957).

Now, therefore in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

- Shri Mado Singh S|o Hait Ram R|o Kutubpur, Post-Sikapur Distt. Bulandshahar. (Transferor)
- Shrimati Sat Bir Devi woo Khchado Singh Roo Kutubpur PO Sikarpur, Bulandshahar. (Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned.

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the official Gazette or a period of 30 days from the service of the notice on the respective persons whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Khatta No. 286 Kutubpur Bulandshahar.

Date: 26-7-84

Seal:

Strike off where not applicable.

निवेश न० एम 1482/83-81 -- मतः मुझें जे०पी० हिलोरी, मायकर प्रिधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसके प्रश्नात 'उक्त मधिनियम' कहा गया है) की धारा 269ख के मधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्मिन, जिसका उचिन बाजार मून्य 1,00,000 से मधिक हैं भीर जिसकी स० 7101 हैं तथा जो मारगाबाद में स्थित हैं (शीर इससे उपायक मनुसूची में मीर पूर्ण रूप से विश्वास में , रिजस्ट्रीकर्सा अधिवारी के कार्यालय बुलन्वगहर में, रिजस्ट्रीकरण प्रधितियम, 1908 (1908 का 16) के माधीन तारीख 17-9-83 को पूर्वोन्त सम्मित्त के उचित बाजार मूल्य से कम के वृथ्यमान प्रतिफल के निए मन्तरित की गई है मीर मुझे यह विश्वाम करने का कारण यह है कि यथापूर्वोक्त सम्मित का उचित बाजार मूल्य, उनके दृश्यमान प्रतिफल से, ऐसे वृश्यमान प्रतिफल के पन्द्रह प्रतिगत से अधिक हैं मन्तरक (अन्तरको) भीर अन्तरिती (अन्तरियो) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्यों में युक्त भन्तरण, लिखित से बास्तिक रूप से कथिन नहीं किया गया है।

(क) अन्तरण से हुई किमी आम की बाबन, आयकर अधिनियम 1961 (1961 का 43) के अधीन कर देने के अन्तरक के दायित्व में कभी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए स्रीर/या

(च) ऐसे किसी भाय मा किसी धन या अन्य भारितयो की जिन्हें भारतीय आयकर भिधिनियम, 1922 (1:22 का 11) या आयकर भिधिनियम, 1961 (1961 का 43) या धनकर भिधिनियम, 1967 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती है। राप्तकट नहीं किया गया था किया जाना चाहिए था छिपान में सुविधा के लिए

म्रतः प्रश्न उक्त प्रविनियम की धारा 269ग के प्रतुनरंग में, मैं उक्त प्रिधिनियम की धारा 269ग की उपधारा (1) के प्रधीन, निम्नलिखन व्यक्तियों प्रयोत —

 श्री फीरराम पुत्र भिक्कत सिह नि० गुलावठी खुदं--प्र० प्रगीता
 पो० गुठावाली--जिला ृबुल-दशहर (प्रस्तिरिती)

को मह सूचना जारी करके पूर्वाक्त सम्पत्ति के धर्णन के लिए कार्य-वाहिय शुरु करता हू। उक्त सम्पत्ति के भ्रर्जन के सम्बन्ध मे कार्ड भी श्राक्षेप —

- (क) इस सूचना के राजपक्ष में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधि, या नर्यम्बन्धी व्यक्तिया पर सूचना की तामील 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद म समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तिया में से किसी व्यक्ति के द्वारा।
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की नारीख के 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पान में हितबद्ध किसी प्रन्य व्यक्ति द्वारा भ्रश्लोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकेंगे।

स्पष्टीकरण:--इसमे प्रयुक्त शब्दो श्रीर पदो का, जो आयकर मिश्र-नियम, 1961 (1961 का 43) के श्रव्याय 20क मे परिभाषित है, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय मे वियागया है।

ग्रनुमूची

माराजी न० 1189--1192--1193 भारताबाद जिता बुलन्दशहर

तारीख . 26-7-84

माहर:

(जो लागू न हा उसे काट वीजिए)

Ref. No. M-1482/83-84.—Whereas I, J. P. Hilori, being the Competent Authority authorised by the Central Government in this behalf under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), hereinafter referred to as the said Act, have reason to believe that immovable property having a fair market value exceeding Rs. 1,00,000 and bearing No...... situated at Orangabad (and more fully described in the schedule below) has been transferred and registered under the registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Bulandshahar under registration No. 7101 dated 17-9-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the

transferor(s) and transferee(s) has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer and or;
- (b) facilitating the concealment of any income or any money or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957).

Now, therefore in pursuance of Section 269C of the taid Act, I hereby initiate proceedings for acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:

1. Shri Panthi Singh So Lal Ji Ro Orangabad (Post-Baran Distt. Bulandshahar),

(Transferor)

2. Shri Fary Ram S/o Bhikan Singh R/o Gulawithi Khu.d (Pargana) Agota Post-Guthawali (Distt. Bulandshahar).

(Transferce)

3. Shri Fary Ram Soo Bhikan Singh Roo Gulawithi Khurd (Pargana) Agota Post-Guthawali (Distt. Bulandshahar).

[person(s) in occupation of the property]

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned.

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the official Gazette or a period of 30 days from the service of the notice on the respective persons whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazettee.

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Khasra No. 1189 Orangabad Bulandshahar

Dated: 26-7-84

Seal:

Strike off where not applicable.

निदेश नं० एम 1483/83-84:—मनः मुझे जें०पी० हिलोरी भायकर मिंधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसके पश्चात् 'उन्न प्रिति-नियम' कहा गया है) की धारा 269 ख के प्रश्नीन सक्षम प्राधिकारी को यह विप्रवास करने का कारण है कि स्थावर सम्पन्ति, जिसका उनित बाजार मूल्य 25,000 से श्रीधक है भीर जिसकी सं० 2484 है तथा जो ग्राम सिकेडा में स्थित है (ग्रीर इससे उपाबद्ध ग्रनसूची में ग्रीर पूर्ण रूप से विण्त है), रिवाद ग्रीविकारी ये कार्यात्य गढ़ में, रजिस्ट्री-करण प्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के ग्राधीन तारीख 17-9-83

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मृत्य से कम के दृष्यमान प्रतिफल के लिए अस्तरित की गई है और मुझे यह विष्णास करने का कारण है कि यथापुर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार सूच्य, उनक दृष्यमान प्रतिफल के पन्द्रह प्रतिगत से अधिक है अन्तरक (भन्त रको) और अन्तरिती (अन्तरितिया) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तथ पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखन उद्देश्यों से युक्त अन्तरण, निक्तित में वास्तिक रूप से कथित नहीं किया गया है।

- (क) धन्तरण से हुई किसी ग्राय की बाबन, ग्रायकर श्रीधिनियम, 1961 (1961 का 43) के ग्रिधीन कर देने के ग्रान्तरक के दायित्व में कमी करने या उसरो बचने में सुविधा के लिए ग्रान/या
- (ख) ऐसे किसी भाय या किसी धन या अन्य आस्तियां की जिन्हों भारतीय ध्रायकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या भायकर भ्रधिनियम, 1961 (1961 का 43) या धनकर प्रधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनायं भ्रन्तिरती द्वारा प्रकट नहीं किया गया वा या किया जाता चाहिए था, कियाने में मुविधा के लिए

मतः ग्रय गुक्त प्रिधिनियम की धारा 269ग के प्रनुपरण में, मैं उक्त प्रिधिनियम की धारा 269ग की उप आरा (1) के प्रजीन, निम्नानिखित व्यक्तियो ग्रथित .--

- श्री योगेश कुमार, दीपक, अजय मंजय पुत्र—राम मिह, निवासी, ग्रा० भिकैंडा मुरादाबाद प्र० पो० गइ, जि० गाजियाबाद (प्रत्नरक)
- श्री णफीक व मु० खलील पुत्र मु० तकी निवासी——चाहणोर हापुड़ प्र०पो० हापुड़, जि० गाजियबाद (श्रम्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के प्रर्जक के लिए कार्य-वाहियां शरू करता हू। उक्त सम्पत्ति के प्रर्जन के सम्बन्ध में कोई भी प्राक्षेप:---

- (क) इस सूचना के राजपन्न में प्रकाणन की नारी आद से 45 दिन की प्रविध, या नत्मम्बरधी व्यक्तियों पर सूचना की तामीन 30 दिन की प्रविध, जो भी श्रवध बाद में ममाप्त होती हो, के भीतर पूर्योक्त व्यक्तियों में से किमी व्यक्ति के द्वारा।
- (ख) इस सूचना के राजपक्ष मे प्रकाशन की तारीख के 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हिनबद्ध किसी प्रत्य व्यक्ति द्वारा प्रधोहस्ताक्षरी के पान लिखित में किए जा नहेंगे।

म्यष्टीकरण:--इसमें प्रमुक्त शब्दों आँर पदों का, जो भायकर प्रधि-नियम, 1961 (1961 का 43) के प्रध्याय 20क में परिभाषित है, वही प्रथं हागा जा उस प्रध्याय में दिया गया है।

धनुसूची

ग्राम--सिकैडा मुराबाबाद प्र०१०त० गडु जि० गाजियाबाद व० न० 383

नारी**ख**: 26-7-84,

मोहर :

(जो लागून हो उसे काट वीजिए)

Ref. No. M-1483|83-84.—Whereas I, J. P. Hilori being the Competent Authority authorised by the Central Government in this behalf under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), hereinafter referred to as the said Act, have reason to believe that immovable property having a fair market

value exceeding Rs. 1,00,000|- and bearing No. situated at Khasra No. 383 Sikaida (and more fully described in the schedule below) has been transferred and registered under the registration Act, 1908 (16 of 1908) u|s. 269AB of in the office of the Registering Officer at Garh under registration No. 2484 dated 17-9-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property by more than fifteen percent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the transferor(s) and transferee (s) has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer and or;
- (b) facilitating the concealment of any income or any money or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957.)

Now, therefore in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:

1. Shri Yogesh Kumar, Depak, Ajai Sanja Slo Ram Singh Rlo Sikaida Muradabad Post Garh, Distt. Ghaziabad.

(Transferor)

- Shri Saffic Mohamad Khalil S|₀ Moh. Taki R|o Chahsore Hapur, Post Hapur, Distt. Ghaziabad. (Transferec)
- 3. Shri Saffic Mohamad Khalil So Moh. Taki Ro Chahsore Hapur, Post Hapur, Distt. Ghaziabad. (Person(s) in occupation of the property).

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned.

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of the notice on the respective persons whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazettee.

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Khasra No. 383 Village Sikaida Muradabad Post Garh, Distt. Ghaziabad.

Date: 26-7-84

Seal:

Strike off where not applicable.

निवेश नं ० एम-1507/83-84---अतः मुझे जे० पी० हिलोरी, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है) की धारा 260% के अधीन राक्षस प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्पाचर सगित, जिसका उच्चित आजार मूल्य 1,00,000/- से अधिक हैं और जिसकी स० 7458 है तथा जो 34 इंदर-रोड देहरादून में स्थित हैं(और इसने उगायद न्यूचनी में और पूर्ण रूप से अणित है), राजस्ट्रीकार्ता अधिकारी के कार्यात्रय सवाना मेरठ में, रजीस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (190% का 16) के अधीन नारीख 26-9-83 को पूर्वोक्त संपत्ति के उच्चित बाजार मृप्य से का के दृश्यमान प्रतिकल के लिए अस्तरित की गई है और भूने यह विश्वाम करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपत्ति का उच्चित बाजार मृप्य, उसके दृश्यमान प्रतिकल से, ऐसे बृश्यमान प्रतिकल के पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है अन्तरक (अन्तरिकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिकल, निम्नलिखन उद्देश्यों से युक्त अन्तरण, लिखित से वास्तिवक कूप से कथित नहीं किया गया है।

- (क) अन्तरण से हुई किसी आग्र की बाबन, आग्रकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अधीन कर देने के अन्तरक के दायिस्व में कभी करने या उसमें अचने मेसुविधा के लिए और/ या
- (ख) ऐसे किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों की जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरित्ती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए थां, छिपाने में मुखिद्या के लिए

अत. अब युक्त अधिनियम की छ।रा 269ग के अनुसरण में, मैं उक्त अधिनियम की धारा 269ग की उप धारा (1) के अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों अर्थान '---

- 1 श्रीमनी वृजिकशोरी वधावर (अन्तरक)
 पत्नी भ्वर्गीय, ए० एल० वधावर
 नि०--34 इदर रीड---देहराष्ट्रन
- श्री मामक भव खब्रुजा
 पुन्न स्व० श्री जी० डी० खंडूजा ब
 श्रीमती विजय लक्ष्मी खब्रुजा
 नि०---110/बी सिविस लाईन--वरेली

को यह मूचना जारी करके पूर्वोक्त संपत्ति के अर्जन के लिए कार्य-वाहियां गुरू करना हूं। प्रक्त सपिल के अर्जन के सबंध में कोई भी आक्षेप:---

- (क) इस सूचना के राजपल्ल में प्रकाशम की तारीख से 45 दिन की अवधि, या नत्सकंधी व्यक्तियों पर सूचना की तामील 30 दिन की अवधि, जो भी अवधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति के द्वारा।
- (ख) इस सूचना के राजपत्त में प्रकाशन की तारीख के 45 दिन के भीतर उनत स्थावर संपत्ति में हितवद्य किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहरताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकेंगे '

स्पर्ध्विकरण इसमें प्रयुक्त कब्बों और पदों का, जो आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अध्याय 20क में परिभाषित है, वहीं अर्थ होंगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुमूची

गली न० 34 वंदर राज, देहरादूम

तार(ख . 26-7-81

मोह्र:

जालागुन हैं। उसे काट दीजिए।

Ref No. M-1507 83-84 :--- Whereas, I J. P. Hilori being the Competent Authority authorised by the Central Government in this behalf under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), hereinafter referred to as the said Act, have reason to believe that immovable property having a fair market value exceeding Rs. 1,00,000 and bearing No. situated at 34 Inder Road Dehradhun (and more fully described in the schedule below) has been transferred and registered under the registration Act, 1908 (16 of 1908) u₁s 269 AB of in the office of the Registering Officer at Mawana Meerut under registration No. 7458 dated 26-9-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property by more than fifteen percent of such apparent consideration and that the consideration or such transfer, as agreed to between the transferor(s) and feree(s) has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer and or;
- (b) facilitating the concealment of any income or any money of other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferce for the purposes of the Indian income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957).

Now, therefore in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:

- 1. Shrimati Brij Kishori Badhwar w|o Late Shri A. L. Badhwar R|o 34 Inder Road, Dehradun (Transferor)
- Shri Dr. Nanak Chand Khanduja Slo Late Shri G. D. Khanduja and Smt. Vijai Laxmi Khanduja Rlo 110|B, Civil Lines Bareily. (Transferee)
- Shri Dr. Nanak Chand Khanduja Slo Late Shri G. D. Khanduja and Smt. Vijai I axmi Khanduja Rlo 110 B, Ciil Lines Bareily. (Person(s) in occupation of the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned

(a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the official Gazette

- or a period of 30 days from the service of the notice on the respective persons whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

No. 34, Inder Road Dehradun.

Date: 26-7-84

Seal:

Strike off where not applicable.

निदेश नं ० एम-1540/83-84.—अनः मुझे कें ० पी० हिनोरी, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिमे इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिमे इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम कही गया है) की धारा 269क के अधीन मक्षम प्रधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सपिन, जिसका उचिन बाजार मृत्य 1,00,000/- से अधिक है और जिसकी स० 1404 है तथा जो प्लॉट 10 गढ म्० रोड मेरट मे स्थित है (और इससे उपावत अनुसूची मे और पूर्ण क्य से विश्वास, 1908 (1908 का 16) के अधीन नारीख 14-10-83 को पूर्वोक्त सपिन के उचिन बाजार मृत्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अस्नरित की गई है और मझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथा-पूर्योक्त सपिन का उचिन बाजार मृत्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, ऐसे कृष्यमान प्रतिफल के पद्म प्रतिमान प्रतिफल के पद्म प्रतिमान प्रतिफल के पद्म प्रतिमान प्रतिफल के विष् प्रतिमान प्रतिक्ति (अन्तरिक्षो) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखिन उद्देण्यो से गक्त अन्तरण निखन मे वामनविक कप से विष्त नहीं किया गया है।

- (क) अन्तरण से हुई किमी आय की बाबत, आयकर अधिनियम, 1961 , (1961 का 43) के अधीन कर देने के अन्तरक में दायित्व में कमी करने या उसने बचने में मुत्रिधा के लिए और/या -
- (ख) ऐसे किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों की जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) या धन-कर अधिनियम 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए

अतः अब युनत अधिनियम की धारा 260ग के अनुसरण मे, मैं उक्त अधिनियम की धारा 269ग की उप धारा (1) के अधीन, निम्नलिखित अधिनियम अर्थात्:---

- 1 श्री ए० पी० भर्मा पुत्र स्व० प० राजा राम शर्मा (अंतरक) मैनेजर खादी ग्राम श्रद्धींग भवन. रिगल बिल्डिंग कर्नाट प्लेस, नई दिल्ली,
- 2. श्रीमती डा॰ बीना रानी ग्प्ता ·(अन्तरिती)

 C/o डा॰ विमोध कुमार गुप्ता, 215 मोसी गण बेगम किज रोड, भेरठ

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सपित के अर्जन के लिए कार्य-वाहियां शुरू करना हूं। उक्त संपत्ति के अर्जन के सबध में कोई भी आक्षेप .---

 (क) इस सूचना के राजपल में प्रकाशन की सारीच से 45 विन की अविधि, या तत्संबंधी व्यक्तियों पर सूचना की तामील 30 विक की अवधि, जो भी अवधि बाद में समाप्त होती हा, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति के द्वारा।

(सा) इस सूचना के राजपत्र मे प्रकाशन की नारील की 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सपत्ति मे हिन्तबद्ध किसी अस्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखिन मे किए जा सकेंगे।

स्पष्टीकरण '--इसम प्रयुक्त उणब्दों और पदो का, जो आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अध्याय 20क में परिभाषित है, यही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

स्वित प्लाट ना 10 शहमान्तीमवर रीष, मेरठ ।

तारंखा: 26-7-84

मोष्ट्र:

जो लागून हो उसे काट वीजिए।

Ref. No. M-1550|83-84 :—Whereas, I J. P. Hilori being the Competent Authority authorised by the Central Government in this behalf under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), hercinafter referred to as the said Act, have reason to believe that immovable property having a fair market value exceeding Rs. 1,00,000 and bearing No. situated at No. 4292 Garh Mukteswar Road (and more fully described in the schedule below) has been transferred and registered under the registration Act, 1908 (16 of 1908) u/s 269 AB of in the office of the Registering Officer at Meerut under registration No. 1404 dated 14-10-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property by more than fifteen percent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the transferor(s) and transferee(s) has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer and or;
- (b) facilitating the concealment of any income or any money or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferce for the purposes of the Indian income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957).

Now, therefore in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:

- 1. Shri Anand Prakash Sharma Soo I ate Pandit Raja Ram Sharma Village Silp A-1 Baba Kharak Singh Marg, Delhi. (Transferor)
- Shrimati Dr. Beena Rani Gupta C/o Dr. Vinod Kumar Gupta, 215, Soti Gong Begam Brij Road, Meerut. (Transferce)

3. Shrimati Dr. Beena Rani Gupta Clo Dr. Vinod Kumar Gupta 215, Soti Gang Begam Brij Road, Meerut. (Person(s) in occupation of the property).

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned-

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the official Gazette or a period of 30 days from the service of the notice on the respective persons whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Plot No. 10, Garh Mukteshwar Road, Mecrut.

Dato: 26-7-84

Seal:

Strike off where not applicable.

निर्देण तं ० एम-1551/83-84--अत मुझे जे० पी० हिलोरी, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसके प्रण्वात् 'उकत अधिनियम' कहा गया है) की धारा 269 ख के अधीन सक्षम प्राधिवारी को यह विश्वास करने का कारण है कि रथावर सपत्ति, जिसका उचित बाजार मृत्य 25.000/- मे अधिक है और जिसकी मं० 1403 है तथा जो 215 सोती गंज भेरठ में रियल है (और इससे उपाबद अनुसूची में और पूर्ण कप में वर्णित है), रिजस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय भेरठ में, रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के आधीन तारीख 14-10-83 को पूर्वोक्त संस्पत्ति के उचित बाजार मृत्य में कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अस्तरित की गई है और अबे यह विश्वास करने का कारण है कि यथा-पूर्वोक्त सस्पत्ति का उचित बाजार मृत्य, उसके वृश्यमान प्रतिफल से, ऐसे दृण्यमान प्रतिफल के पन्द्रह प्रतिणत से अधिक है अत्तरक (अन्तरको) और अन्तरिती (अन्तरितियो) के बीच ऐसे अन्तरण ने लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्यों से यक्त अन्तरण, लिखित में वास्तिथक रूप से कथित नहीं किया गया है।

- (क) अन्तरण मे हुई किमी आय की बाबत, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अधीत कर देने के अन्तरक के वायित्व मे कमी करने या उससे बचने में मुखिधा के लिए और या
- (श्व) ऐसे फिसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों की जिन्हें भारतीय आयषार अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती दारा प्रकट नही किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिशने में मुविधा के लिए

अत अब युनन अधिनियम की धारा 269ग के अनुसरण में, मैं उक्स अधिनियम की धारा 269ग की उप धारा (1) के अधीन, निम्नलिश्चिन क्यक्तियो अर्थात् —

1.श्री डा० बी० कै० गुप्ता (अन्सरिती) 2:15 मोती गज बेगम क्रिज शंड, भेक्ठ

- 2 श्री डा० ए० पी० गर्मा पुत्र स्व० श्री राजा राम गर्मा (अस्तरक) नि०—ग्रामिशित्य ए-। बाबा खडक सिह मार्ग, नई दिल्ली, को यह सूचना जारी करके पूर्वेश्नि संपन्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहिया गुरू करना है। उक्त संपन्ति के अर्जन के संबंध में कीई भी आक्षेप:---
- (क) इस सूचना के राजियक्ष में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अवधि, या तत्संबंधी व्यक्तियों पर सूचना की तामील 30 की अवधि, जो भी अवधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों से से जिसी व्यक्ति के द्वारा।
- (क्रा) इस सूचना के राजपन्न में प्रकाशन की तारीख़ के 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सपिन के हिनवदा किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकेगे।

स्पष्टीकरण:---इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अध्याय 20क में परिभाषित है, वही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अमुसूची

प्लाट नं 10, गढ़म् स्तेश्वर रांड, मेरठ

तारीख: 26-7-84

File No. 1551|83-84 :--Whereas, I. J. P. Hilori being the Competent Authority authorised by the Central Government in this behalf under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), hereinafter referred to as the said Act, have reason to believe that immovable property having a fair market value exceeding Rs. 1,00,000|- and bearing No. 4292 Garh Road situated at Meerut (and more fully described in the schedule below) has been transferred and registered under the registration Act, 1908 (16 of 1908) uls. 269 AB of in the office of the Registering Officer at Meerut the said Actoread with rule 48DD of Income-tax Rules, 1962 under registration No. 1403 dated 14-10-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the transferor(s) and transferee(s) has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer and or;
- (b) facilitating the concealment of any income or any money or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957).

Now, therefore in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice 570 GI/84: -4

under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:

- Shri Anand Prakash Sharma So Late Shri Raja Ram Sharma Ro Gram Shilp A-1, Baba Kharak Singh Marg, Delhi. (Transferor).
- Shri Dr. Vinod Kumar Gupta R|o 215, Soti Gang Begum Bridge Road, Mecrut. (Transferce)
- 3. Shri Dr. V. K. Gupta (Person(s) in occupation of the property).

Objections, if any, to the acquisition of the said broperty may be made in writing to the undersigned

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the official Gazette or a period of 30 days from the service of the notice on the respective persons whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

SCHEDULE

Plot No. 10, Garh Mukteshwar Road, Meerut.

Date: 26-7-84

Seal:

Strike off where not applicable.

कानपुर, 24 जुलाई, 1984

निदेश नं एस-1552/83/84.—श्रतः मुझे जै० पी० हिलोंगे आयकर प्रिश्वित्यम 1961 (1961 का 43) (जिसे इसके पण्यात् 'उकत प्रिक्तिनयम' त्रहा गया हैं) की धारा 269य के प्रधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वाम करने का कारण है कि स्थावर सपिन जिसका उचित बाजार मृत्य, 100000/- में प्रिधिक हैं और जिसकी सं० 1174 है तथा जो मथुरा में स्थित हैं (और इसमें उपावड अनुसूची में और पूर्ण रूप में विणित हैं), रिजस्ट्रीकर्ता प्रधिकारी के कार्यालय दिल्ली में रिजस्ट्री करण प्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के प्रधीन तारीख 12-10-83 को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मृत्य में कम के दृश्यमान प्रतिकल के लिए प्रस्तरित की गई है और मृत्री यह विश्वाभ करने का कारण है कि यथापुर्वोक्त संपत्ति का उचित बाजार मृत्य उसके दृश्यमान प्रतिकल में ऐसे दृश्यमान प्रतिकल के पन्देह प्रतिशत से प्रधिक है धन्तरक (प्रत्यरक्ते) और अन्तरितों (प्रतिरियों) के बीच ऐसे प्रन्तरण के निए तय पाया गया प्रतिकल, निम्नलिखित उद्देश्यों से युक्त घन्तरण लिखित में वास्त्रविक रूप में कियत नहीं किया गया है।

- (क) श्रन्तरण में हुई किमी श्राय की बाबत श्रायकर श्रिधिनियम, 1961 (1961 का 43) के श्रधीन कर देने के श्रंतरक के वायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुबिधा के लिए श्रीर/या
- (ख) ऐंमे किसी आय या किमी धन या अन्य आस्तियों की जिन्हें भारतीय आयकर शिधनियम 1922 (1922 का 11) या आपकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) या अन कर

प्रधिनियम 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ घन्तरिती द्वारा प्रकट मही किया गयाचा या किया जाना वाहिए या, छिपाने में सुविधा के लिए।

ग्रतः श्रव उक्त श्रिक्षिनियम की धारा 269ग के प्रनुसरण में मैं, उक्त श्रीविनियम की धारा 269ग की उपधारा (1) के ग्रधीन निम्नलिखित व्यक्तियो प्रयोत् ----

- 1. सेट राधा कृष्ण ममोरियल चैरीटेबुल (अंतरक) ट्रस्ट द्वारा श्री महावीर प्रकाद पोहार, अमृतासेर गिल मार्ग, नई दिल्ली
- 2 श्री राजेश कुमार एव सुरेण चन्द्र (भ्रतरिती) पुत्र श्री गोविन्व राभ नि० गली मेंघ चौक, मथ्रा
- 3. श्री श्रीमती कुमारी ग्रंतरिती (वह व्यक्ति, जिस के ग्रंपिकोग में सपनि है)

की यह सूचना जारी करके पूर्वीका सम्मित्त के अर्जन के लिए कार्यवाहियां णुरू करता हूं। उनत समित के प्रार्थन के सबध में कोई भी प्राक्षीय ——

- (क) इस सूचना ने राजपन्न म प्रकाशन की नारीख से 45 दिन की अविधि, या तत्समधी व्यक्तियों प्रर सूचना की नामील 30 की अविधि जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति के द्वारा।
- (स्त्र) इस सूचना के राजपन्न में प्रकाशन की तारीख के 45 दिन के मीतर उक्त स्थावर संपत्ति में हतवात किसी भ्रत्य व्यक्ति द्वारा प्रधोहस्ताक्षरी के पास लिखिन में किए जा सकेंगे।

स्पाटीकरण — इसमें प्रयुक्त गड़ि भीर पदों का जो आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अध्याय 20क में पिशावित है, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

यनुन्ची

प्लाट न० 913 मोहल्ला गाकरन नाय मथ्रा (यू० पी०)

तारीख . 14-7-84

मोहर

[भी लाग न हा उमे काट दीजिए]

Kanpur, the 24th July, 1984

K-402/KNP/83-84.-Whereas, I, J. P. Hilori, being the Competent Authority authorised by the Central Government in this behalf under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), hereinafter referred to as the said Act, have reason to believe that immovable property having a market value exceeding Rs 1,00,000 and bearing No. 913 situated at Moh Gokran Nath, Mathura (and more fully described in the schedule below) has been transferred and registered *under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Delhi under registration No 1434 dated 12-10-83 for an apparent consideration which is less than the market value of the aforesaid property by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the transferor(s) and transferee(s) has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer and or,
- (b) facilitating the concealment of any income or any money or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferce for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957.)

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

- 1. Seth Radha Krishna Memorial Charitable Trust, Through Shri Mahavir Prasad Poddar, Amrita Sher Gill Marg, New Delhi. (Transferor)
- 2. Shri Rajesh Kumar and Suresh Chandra, Sons of Sri Govind Ram, Rlo Gali Megha Chowk, Mathura (Transferce).
- 3. Shri|Smt. —do- Transferce (Person(s) in occupation of the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned.

- (a) by any of the atoresard persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the official Gazette or a period of 30 days from the service of the notice on the respective persons whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter

SCHEDULF

Plot No. 913 at Mohalla Gokram Nath, Mathura (U.P.)

Date: 24|7|84

SEAL

*Strike off where not applicable

मूल्य 1,00,000/- से प्रधिक है श्रीर जिसकी सं० 9097 है तथा जो रंगाना में स्थित है (श्रीर इसमें अपाइद्ध श्रनुसूची में भीर पूर्ण रूप से विणत है) रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय कैराना में रिजस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के भाषीन तारी व 13-10-83 को पूर्वोक्त संपत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए मन्तरित की गई है भीर मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्योक्त संपत्ति का उचित बाजार मूल्य उसके दृश्यमान प्रतिफल से. ऐसे दृश्यमान प्रतिफल के पन्द्रह प्रतिगत से प्रधिक है अन्तरक (अन्तरको) और अन्तरिती (अंतरियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्य से युक्त श्रन्तरण लिखित में वास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है।

- (क) भन्तरण से हुई किसी भाय की बाबत भायकर मिश्वनियम, 1961 (1961 का 43) के प्रधीन कर देने के भन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए, भौर
- (ख) ऐसे किसी प्राय या फिसी धन या प्रत्य प्रास्तियों की जिन्हें भारतीय प्रायकर प्रधिनियम 1922 (1922 का 11) या आयकर प्रधिनियम 1961 (1961 का 43) या धन-कर प्रधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ प्रस्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए।

म्रातः ग्रव युक्त मिसिनियम की धारा 269म के श्रनुसरण में मैं, उक्त मिसिनियम की धारा 269म की उपधारा (1) के प्रधीन निम्नलिखित व्यक्तियों शर्यातु:—

- 1. श्री जुग मन्यर वास मूल मंकर लाख (ग्रीतरक) निब्टीव 5--ग्रीन पार्क एक्सटेंग्रन, नई दिल्ली-1
- श्री श्रोम प्रकाश व राज पाल सिंह के (अंतरिती)
 पुत्र करम सिंह नि०-किशन पुर विराल
 डा०-खास जि० मेरठ

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त संपत्ति के प्रजैन के लिए कार्य-वाहियां शुरू करता हूं। उक्त संपत्ति के धर्जन के संबंध में कीई भी श्राक्षेप:---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाणन की सारीखासे 45 दिन की ग्रविध, या तस्सविधी व्यक्तियों पर सूचना की तामील 30 की ग्रविध, जो भी श्रप्रधि बाद में समाप्त होती हो के भीतर पूर्वीकन व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति के द्वारा।
- (ख) इस सूचना के राजपत में प्रकाशन की तारीख के 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर संपत्ति में हितवद किसी प्रस्थ व्यक्ति द्वारा प्रधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकोंगे।

स्पष्टीकरण:---इसमे प्रयुक्त शब्दों भौर पदीं का जो भ्रायकर श्रश्विनियम, 1961 (1961 का 43) के भ्रष्टयाय 20क में परिभाषित हैं, वहीं श्रर्थ होगा जो उस श्रष्टयाय में दिया गया है।

मनुगुवी

ग्रा०---रंगाना र्यमा नं० 70 कैराना--जि०-- म्० नगर।

तारीख: 26/7/81

मोहर:

[जो लागुन हैं। उसे बाट दीजिए]

M-1608|83-84.—Where as, I J. P. Hilori being the Competent Authority authorised by the Central Government in this behalf under Section 269B of the income tax Act, 1961 (43 of 1961), hereinafter referred to as the said Act, have reason to believe that immovable property having a fair

exceeding Rs. 1,00,000 and' market value bearing No. 9097 situated at Rangana (and more fully described in the schedule below) been transferred and registered *under the registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Kairana under registration No. 9097 dated 13-10-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the transferor(s) and transferee(s) has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of;

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer and or;
- (b) facilitating the concealment of any income or any money or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957.)

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

- 1. Shri Jugminder Das Slo Shanker Lal Rlo T. S. Grain Park Extension New Delhi-1. (Transferor).
- 2. Shri Om Prakash, Raj Pal Singh Slo Karam Singh, Rlo Kishan Pura Biral, Post-Khas-Bagpat Distt. Meerut. (Transferee).

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned.

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 day_s from the date of publication of this notice in the official Gazette or a period of 30 days from the service of the notice on the respective persons whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expressions used herein a_5 are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

SCHEDULE

Village—Rangana Khatta No. 70 Distt. Muzaffar Nagar.

Date: 26-7-84.

SEAL

*Strike off where not applicable.

निवेस ने० एम--1624/83-84--प्रतः मुझे जे० पी० हिलोरी, मायकर प्रधिनियम 1961 (1961 का 43) (जिसे इसके पश्चात् 'ज्वस प्रधिनियम' कहा गया है) की धारा 269ख के प्राधीन सक्षम प्रधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर मंपिन जिमका उचित्र बाजार मूल्य 1,00,000/- से प्रधिक है और जिसकी सं. 22513 है तथा जो 213 गांधीनगर में स्थित है (और इससे उपावद्ध प्रनुस्ती में भीर पूर्ण रूप से वणित है) रिजस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय गाजियाबाद में, राजस्ट्रीकरण प्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के प्राधीन तारीख 19-10-83 को पूर्वोक्त संपत्ति के जिल्न बाजार मूल्य में कम के दृष्यमान प्रतिफल के निए प्रन्तरित की गई है और मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संस्थित का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से ऐसे दृश्यमान प्रतिफल के पन्नह प्रतिशत में अधिक है प्रस्तरक (अन्तरकों) भीर प्रस्तरित (अन्तरित्यों) के बीच ऐसे प्रस्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखन उद्देग्यों से युवन प्रन्तरण, लिखित में बास्तिक रूप से किथत नहीं किया गया है।

- (क) ग्रन्तरण से हुई किसी ग्राय की आबत, ग्रायकर प्रधिनियम, 1961 (1961 का 43) के ग्रधीन कर देने के भन्तरक के वायित्व में कमी करने या उसमे बजने में सुविधा के लिए भौर/या
- (ख) ऐसे किसी भाय या किसी धन या भ्रस्य भ्राद्वितयों की जिन्हें भारतीय भ्रायकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) य भ्रायकर भ्रधिनियम, 1961 (1961 का 43) या धन-कर श्रधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोगनार्थ भ्रन्तरिती ब्रारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में मुविधा के लिए

भतः भव युक्त भिविनयम की धारा 269ग के भनुसरण में, मैं उक्त भिविनयम की धारा 269ग की उपधारा (1) के भिधीन, निम्नलिखिन व्यक्तियों भर्थात्:---

- 1. श्री देवराज महाजन पुत्र श्री विशम्भर दास महाजन (भ्रांतरक) निर्वा जीव जीव एव फिलैंटस नंब 28 मेख सराय, मासबीय सगर, नई दिल्ली ।
- 2. श्री सुभाष कुमार गोयल पुत्र (झम्तरिती) एन० पी० गोयल (निवासी 213 गोधी नगर गाजियाबाद) को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त [संपत्ति के झर्जन के लिए कार्यवाहियां शुरू करता हूं। उक्त संपत्ति के झर्जन के संबंध में कोई भी आक्षेप:---
- (क) इस सूचना के राजपत्न में प्रकाशन की तारीख से 4.5 दिन की अविध या तत्संबंधी व्यक्तियों पर सूचना की तामील 30 की धविध, जो भी प्रविध बाद में समाप्त होती हो के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति के द्वारा।
- (खा) इस सूचना के राजपद्य में प्रकाशन की तारीखा के 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर संपत्ति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अभीहस्ताक्षरी के पाम निश्चित में किए जा सकेंगे।
- ीकरण:—इसमें प्रयुक्त शब्दों भीर पदों का, जो भायकर धिंतियम, 1961 (1961 का 43) के भ्रष्टयाय 20क में परिभाषित है, वहीं भर्म होगा जो उस भन्याय में विधा गया है।

ग्रनुसूची⁻

भवन नं 213 स्थित गांधी नगर गाजियाबाद

तारी**स**: 26-7-1984

मोहरः

[जो जागू न हो उसे काट दीजिए]

M-1624/83-84.—Whereas, Ι, J. Hilori, being the Competent Authority authorised by the Central Government in this behalf under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), hereinafter referred to as the said Act, have reason to believe that immovable property having a fair market value exceeding Rs. 1,00,000 and bearing No. situated at H. No. 2|3 Ghandhi Nagar . (and more fully described in the schedule below) has been transferred and registered under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Ghaziabad under Registration No. 22513 dated 19-10-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the transferor(s) and transferee(s) has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer and or;
- (b) facilitating the concealment of any income or any money or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957.)

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:

- 1. Shri Deo Raj Mahajan Slo Shri Visambhar Das Mahajan Rlo. D.D.A. Flat No. 28, Sakh Saraya Malviya Nagar, New Delhi. (Transferor)
- Shri Subhash Kumar Goyal S|o N. P. Goyal 213 H. No. Ghandhi Nagar, Ghaziabad. (Transferee).
- 3. Shri|Smt. —do— (Person(s) in occupation of the property).

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned.

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the official Gazette or a period of 30 days from the service of the notice on the respective persons whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation.—The terms and expressions used herein as arc defined in Chapter XXA of the said

Act, shall have the same meaning $a_{\rm S}$ given in that Chapter.

THE SCHEDULE

House No. 213 Ghandhi Nagar, Ghaziabad.

Date: 26-7-84.

SEAL:

*Strike off where not applicable.

- (क) अस्तरण मे हुई किसी आय की बाबत, अध्यकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अधीन कर देने के अस्तरक के दाधिस्य मे कभी करने या उसमे धवने में सुविधा के लिए और/या
- (ख) ऐसे किसी आय या किसी घन या अन्य आस्तियों की जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छियाने में सुविधा के लिए

अतः अब उक्त अधिनियम की धारा 269 ग के अनुसरण में, मैं उक्त अधिनियम की धारा 269 ग की उप धारा (1) के अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों अर्थान :—

- श्री फतेह मिह पुत्र भीरसिह (अन्तरक)
 निवासी—-सैदपुर, हुसेनपुर, डीलना, जलालाबाद
 पो०प्र०—-हापुड्--जि० गाजियाबाद
- 2. श्री ओमबीर, वीरपाल पुत्र गण श्री नवल सिंह आदि (अन्तरिती) निवासी--मैदपुर हुसेनपुर डीलना, जलालाबाद पो०प्र०--हापुर,--जि०--गाजियाबाद

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पक्ति के अर्जन के लिए कार्य-बाहियां गुरू करता हैं। उक्त सम्पक्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप:—

- (क) इस सूचना के राजपत्त में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधि, या तत्सम्बन्धी व्यक्तियो पर सूचना की तामील 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियो में से किसी व्यक्ति के द्वारा।
- (का) इस सूचना के राजपक्ष में प्रकाशन की नारीख के 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्मत्ति में हितबढ़ किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अक्षोहम्तक्षरी के पास निखित में किए जा मकेंगे।

स्पष्टीकरण:--इसमे प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो आयकर अधि-नियम, 1961 (1961 का 43) के अध्याय 20 क में परिभाषित है, बही अर्थ होगा जो उन अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

खसरा नं॰ 229 स्थित सैवपुर, हुसेनपुर खीलना जलालाबाद---हापुष,

जि॰ : गाजियाबाद

तारी**ख**: 26-7-84

मोहर:

(जो लागून हो उसे काट वीजिए)

M-1641/83-84.—Whereas, I, J. P. Hilori being the Competent Authority authorised by the Central Government in this behalf under Section 269B of the Income-tax Act, 1691 (43 of 1961), hereinafter referred to as the said Act, have reason to believe that immovable property having a fair market value exceeding Rs. 1,00,000 and bearing No. 8758 situated at Hapur, Syadpur, (and more fully described in the schedule below) has been transferred and registered "under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Hapur under Registeration No. 8758, dated 22-11-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the transferor(s) and transferee(s) has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object object of:

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer and or;
- (b) facilitating the concealment of any income or any money or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian income-tax Act. 1922 (11 of 1922) or the said Act. or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957).

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:

- 1. Shri Fateh Singh S|o Meer Singh, R|o Sayadpur, Husainpur Delna, Jalalabad Post— Hapur, District—Ghaziabad. (Transferor)
- 2. Shri Jaiparakash, Jaipal, Ompal Slo Shri Nawal Singh Rlo Sayadpur, Husainpur, Delna, Jalalabad Post—Hapur, District—Ghaziabad. (Transferee).

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned.

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of the notice on the respective persons whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation.—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Khata No. 229 Sayadpur, Husainpur Delna Post—Jalalabad, District—Ghaziabad.

Date: 26-7-84.

SEAL:

*Strike off where not applicable.

मिवेश न ० एम ० 1660/83-84:--अत. मुझे जै ०पी ० हिलोरी, आयक र अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसके पण्चात् 'उमन अधिनियम' कहा गया है । की धारा 269 खं के अधीन सक्षम प्राधिक रो को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचिल बाजार मूल्य 1,00,000/ से अधिक है और जिसकी सं ० 1435 है तथा जो सिनौला के दून में स्थित है(और इससे उपावत अनुसूची में और पूर्ण रूप से विश्वत है), रजिस्हीकर्ना अधिकारी के कार्यालय देहराइन में

रिजस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन तारीख 28-9-83 को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्य-भाग प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उक्ति बाजार मूल्य, उसके दृश्य-मान प्रतिफल से, ऐसे दृश्यमान प्रतिफल के पन्नह प्रतिशत में अधिक है अस्तरक (अन्तरका) और अन्तरिती (अन्तरियों) के बीच ऐसे अन्तरण के क्रिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्यों से युक्त अन्तरण,

लिखित में बास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है।

(क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43°) के अधीन कर देने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या 'उससे बचने में सुविधा के लिए और/था

(का) ऐसे किसी आय या किसी धंन या अन्य आस्तियों की जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्त-रितो द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए

स्रतः अस उक्त अभिनियम की घारा 269 ग के अनुसरण में, मैं उक्त अधिनियम की घारा 269 ग की उप घारा (1) के अधीन, निम्न लिखित व्यक्तियों अर्थात् :—

 श्री नरेश कुमार धजाज पृत्र गिरधारी लाल (अन्तरक) अमृत बनस्पति क०लि० गाजियाबाद।

- 2. मैनेजिंग डोईरेक्टर के०के० सोइन (अन्तरिर्ता) के०के० कस्पट्रकणस्म (इंडिया) प्रार्थल गम० 275 ग्रेटर कैलाण पार्ट 2, नई विल्ली।
- 3. श्री/श्रीमती/कुमारी (यह व्यक्ति, जिसके अधिभाग में सम्पन्ति है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कर्य-वाहिया शुरू करता हूं। उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षीप:---

- (क) इस सूचना के राजपत्त मे प्रकाशन की नारीख से 45 दिन की अवाध, या तत्संस्थान्धी व्यक्तियो पर सूचना की नासील 30 की अवधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वकित व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति के द्वारा।
- (खा) इस सूचना के राजपन्न में प्रकाशन की नारीख के 45 दिन के भीतर उक्त स्थाघर सम्पत्ति में हिसबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अझोहस्साक्षरी के पास लिखत में किए जा सकेंगे।

स्पष्टीकरण .--- इसमें प्रयुक्त शब्यों और पदों का, जो अध्यक्त आधि-नियम, 1961 (1961 का 43) के अध्याय 20 क में परिभाषित है. बही अर्थ होंगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अन् सूची

ख । मं । 7.8/1, 10/1, 11/1, सिनौला केन्द्रिय दून दहरादून ।

नारीख: 26-7-84

मोहर.

(जो लागून हो उसे काट दीजिए)

M-1660|83-84.—Whereas, I, J. P. Hilori being the Competent Authority authorised by the Central Government in this behalf under Section 269B or the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), hereinafter referred to as the said Act, have reason to believe that immovable property having a fair market value exceeding Rs. 1,00,000 and bearing No. 1435 situated at Cinola Dehara Dun (and more fully described in the schedule below) has been transferred and registered *under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Dehra Dun under Registration No. 1435 dated 28-9-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property by more then fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the transferor(s) and transferec(s) has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer and or;
- (b) facilitating the concealment of any income or any money or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian

Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, of the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957).

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate p occedings for acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:

- Shri Naresh Kumar Bajaj So Girdhari Lal, Amrit Banaspati Ltd, Ghaziabad. (Transferor)
- Managing Director K. K. Soin, K. K. Constructions (India) (P.) Ltd. M-275 Greater Kailash Part, 2, New Delhi. (Transferee)
- 3. Shri|Smt. —do—
 |Person(s) in occupation
 of the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned.

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of the notice on the respective persons whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation.—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter

THE SCHEDULE

Khasra No. 7, 8|1, 10|1, 11|1 Cinolakendria Dun, Dehradun.

Date · 26-7-84,

SEAL:

'Strike off where not applicable,

निदेण न० एम-1524/83-84 — अत मुझ जे०पी० हिलोरी, आयकर अधिनियम 1961 (1961 वा 43) (जिसे इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' फहा गया है) भी धारा 260ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विण्यास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मत्य 1 00 000/- से अधिक है और जिसकी स० 1313 है तथा जो गाजियाबाद में स्थित है (और इससे उपात्रक अनुसची में और पूर्ण रूप से वर्णित है), रिजर्स्ट्रीलर्ना अधिकारी के वार्यालय सिकल्झाबाद में, रिजस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन नारीख 1-10-83 को पूर्वीक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मृत्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुझे यह विण्वास वरने का कारण है कि यथा-पूर्वीक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मृत्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल सं, ऐसे दृश्यमान प्रतिफल के एन्द्रहे प्रतिणत से अधिक है अन्तरक (अन्तरको) और अन्तरिती (अन्तरियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तथ पाया गया

प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्यो से युक्त अन्तरण, लिखित में **बास्तविक** रूप से कथित नहीं किया गया है ।

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अधीन कर देने के अम्लरक के दायित्व में कभी करने या उससे विकास में सुविधा के लिए और/या
- (ख) ऐसे किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों की जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अस्त-ियम, 19कि नहीं किया गया थाया किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए

अत अब उन्न अिनियम, की धारा 269 म के अनुसरण में, मैं उक्त अधिनियम की धारा 269म की उप घारा (1) के अधीन, निम्न-निखित व्यक्तियों अर्थीन् ——

- । श्री जाहारिया, पुत्र श्री बुद्ध, नि० ग्राम०-हाजीपुर, पो० बरौला जि० गाजिसाबाद (अन्तरक)
- 2 श्री हरीगम, पुत श्री हुनुम सिंह नि० ग्राम-हात्रीपुर, पर० व तह० दावरी, जिला—गात्रियाबाद (अल्लरिनी)
- श्री/श्रोमनो/कृतारो अस्तरितो (यह व्यक्ति, जिसके अधिभोग में सम्पत्ति है)

को यह स्वता जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां शुरू करना हूं। उक्त स्पत्ति के अर्जन के सम्बद्ध में कोई भी आक्षेत्र ——

- (क) इस मूबना के राजरज में प्रकाशन की तारी के से 45 दिन की अबिध, या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर मृजना की तामी ल 30 दिन की अबिध, जो भो अबिध बाद में समाप्त हाती हो, के भीतर पूर्वों वत व्यक्तियों में स किसी व्यक्ति के द्वारा।
- (ख) इस सूचना के राजपन्न में प्रकाशन की तारीख के 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधाहरसाक्षरी के पास विखित में किए जा सकेंगे।

स्पष्टीकरण --- इसमे प्रयुक्त णब्दो और पदा का जो आयकर अधि-नियम, 1961 (1961 का 43) के अध्याय 20क मे परिभाषित है, वही अर्थ होगा जो उस अध्याय मे विया गया है।

अनुसूची

स्त्रेती त० 374 **वा**के ग्राम-हाजीपुर, परगता-दादरी, **जि०-गाजिया-**वार।

नारीख 2 1-7-84

मोहर

(जो लागून हा उसे काट दीजिए)

Ref. No. M-1524|83-84.—Whereas, I, J. P. Hilori, being the Competent Authority authorised by the Central Government in this behalf under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), hereinafter referred to as the said Act, have reason to believe that immovable property having a fair market value exceeding Rs. 1,00,000 and bearing No. 374 situated at Vill. Hazipur, Dadri (and more fully described in the schedule below) has been transferred and registered *under the registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering

Officer at Ghaziabad under registration 4313 dated 1-10-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property by more then fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the transferor(s) and transferce(s) has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer and or;
- (b) facilitating the concealment of any income or any money or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957).

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate p oceedings for acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:

- Shri Jahariya, S|o Shri Budhoo R|o Vill— Hazipur, Post—Varaula, District Ghaziabad. (Transferor).
- 2. Shri Hari Ram, So Sri Hukam Singh, Ro Vill—Hazipur, Teh. Dadri, Distt. Ghaziabad. ((Transferçe).

Shri|Smt. —do—

[Person(s) in occupation of the property].

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned.

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the official Gazette or a period of 30 days from the service of the notice on the respective persons whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation.—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Agricultural Land No. 374, at Village Hazipur, Pargana—Dadri, Distt. Ghaziabad,

Date: 24-7-84.

SEAL:

*Strike off where not applicable.

निवेश नं एम-1666/83-84:—अतः मुझे, जे० पी० हिसोरी, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है) की धारा 269क के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वाम करने का कारण है कि स्थायर मम्पल्स, जिसका उचित बाजार मूल्य 1,00,000/- से अधिक है और जिसकी सं० 25536/83 है सथा जो गाजियाबाव में स्थित है (और इससे उपायद अनुसूची में और पूर्ण क्ष्य से बर्णित है), रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय गाजियाबाद में, रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन तारीख 31-10-83 का पूर्वोक्त मम्पत्ति के उचिन बाजार मूल्य से कम के वृष्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुझे यह विश्वाम करने का कारण है कि यथाप्वोंक्त मम्पत्ति का उचिन बाजार मूल्य, उसके वृष्यमान प्रतिफल से, ऐसे वृष्यमान प्रतिफल के पन्द्रह प्रतिणत से अधिक है अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरियों) के बीच ऐमें अन्तरण के लिए सय पाया गया प्रतिफल निम्नलिखित उद्देश्यों से युक्त अन्तरण, लिखन में वास्तविक रूप से कथिन नहीं किया गया है।

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अधीन कर देने के अस्तरक के बायित्व में कमी करने या उसमें बचत में मुविधा के लिए और/या
- (ख) ऐसे किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों की जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया थाया किया जाना चाहिए धा, छिपाने में सुविधा के लिए

अतः अ**ब** उक्त अधिनियम की धारा 269 ग के अनुसरण में, मैं उक्त अधिनियम की धारा 269 ग की उप धारा (1) के अधीन, निम्नेलिश्वित अ्यक्तियों अर्थात् '--

- 1. श्री मंथन कुमार हितैयी, पृत्र श्री गोविन्द सिंह हितैयी, स० न० 425, बदरपुर विस्ती (अन्तरक)
 - 2. भरत सिंह, पुत्र श्री कृष्ण, निरु ग्राम-क्ररतौनी, जिला बुलस्दणहर (अन्तरिती)
- 3 श्री/श्रीमती/कुमारी अन्तरिती (वह व्यक्ति, जिसके अधिभोग में सम्पत्ति है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाही शुरू करना हू । उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप '--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की नारीख से 45 दिन की अवधि, या नत्सम्बन्धी ध्यक्तियों पर सूचना की नामील 30 दिन की अवधि, जो भी अवधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्योक्त व्यक्तियों में से किसी ध्यक्ति के हारा ।
- (स्त्र) इस सूखना के राजपत्र में प्रकाणन की नारी के 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हिनबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अक्षोहरूनाक्षरी के पास लिखित में किए जा सबेगे !

म्पार्टीकरण -- इस में प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो आयकर अधि-नियम, 1961 (1961 का 13) के अध्याय 20कु में परिभाषित है, वहीं अर्थ शोगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

प्लाट २० आर-9/170, स्थित र जनगर, गाजियाबाद ।

तारीख . 24-7-84

माहर:

(ओं लागून हो उसे काट दीजिए)

Ref. No. M-1666/83-84.—Whereas, I, J. P. Hilori, being the Competent Authority authorised by the Central Government in this behalf under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), hercinafter referred to as the said Act, have reason to believe that immovable property having a fair market value exceeding Rs. 1,00,000 and bearing No. R-9/170 situated at Rajnagar, Ghaziabad (and more fully described in the schedule below) has been transferred and registered *under the registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Regis-Ghaziabad under registration tering Officer at No. 25536 dated 31-10-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property by more then fifteen percent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the transferor(s) and transferec(s) has not been truly stated in the said instrument of transfer with object of:

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer and/or;
- (b) facilitating the concealment of any income or any money or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian income-tax Ac., 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act 1957 (27 of 1957.)

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:

- Shti Manthan Kumar Hitashi Soo, Shri Govind Singh Hitashi, H. No. 425, Badarpur, Delhi. (Transferor).
- Shri Bharat Singh, So Sri Krishna, Ro Vill. Tartauli, Distt. Bulandshahar.

Transferee

[Person(s) in occupation of the property]

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned.

(a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the official Gazette or a period of 30 days from the service of the notice on the respective persons whichever period expires later; (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation.—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Plot No. R-9|170, Raj Nagar, Ghaziabad.

Date: 24-7-84.

SEAL:

*Strike off where not applicable.

निवेश ने एस-1610/83-84:—अतः मुझे भें पि हिलोगी, आयकर अधिनियम. 1961 (1961 का 43) (जिसे इसके पण्डात् 'उक्त अधिनियम कहा गया है) की धारा 265व के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थायर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मृन्य 100,000/- से अधिक है और जिसकी सं० 21900 है तथा जो गाजियाबाद में स्थिस है (और इससे उपाबद्ध अनुस्ची में और पूर्ण क्य से घणित है), रिजर्ड़ीकर्ता अधिकारी के कार्यालय गाजियाबाद में, रिजर्ड़ीकर्ता अधिकारी के कार्यालय गाजियाबाद में, रिजर्ड़ीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन तारीख 7-10-83 को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित वाजोर, मृत्य से कम के दृष्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुझे यह विषयास करने का कारण है कि यथापुर्थोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मृत्य, उसके दृष्यमान प्रतिफल से, ऐसे दृष्यमान प्रतिफल के पद्मह प्रतिशत से अधिक है अस्तरक (अन्तरको) और अन्तरित (अन्तरियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिवित उदृष्य से युक्त अन्तरण, लिखित में बास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है।

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अधीन कर देने के अस्तरक के वायित्व में कमी करने या उससेश्वचने में मुविधा के लिए और /या
- (का) ऐसे किसी आय या किसी घन या अन्य शास्तियो की जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1923 का 11) या आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) या घन -कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए

अतः अब युक्त अधिनियम की धारा 269ग के अनुसरण में, मैं उक्स अधिनियम की धारा 269ग की उप धारा (1) के अधीन निम्नलिखित व्यक्तियों अर्थात् :---

- श्री वी० एन० काक, पुत्र श्री किशन नाथ काक, नि० 412/1, सिविस लाइन्स, एड़की, जि. सहारनपुर (अन्तरक)
- 2. श्रीमती विमला देवी, पत्नी श्री राभेश्वर दघाल, नि० 125, न्यू गांधी नगर, गाजियाबाद । (अन्तरिती)
- 3. श्री/श्रीमती/कुमारी अन्तरिती (वह व्यक्ति, जिसके अधिभोग में जिसके अधिभोग में सम्पत्ति हैं) को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहिया गुरु करता हूं। उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :—
 - (क) इस सूचना के राजपन्न में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अवधि, या तत्सम्बन्धी ध्यक्तियों पर सुचना की तासीख

30 की अवधि, जो भी अवधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति के द्वारा ।

- (ख) इस सूचना के राजपक्त में प्रकाशन की तारीख की 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबढ़ किसी अन्य व्यक्ति इत्रास अधीहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकेंगे।
- स्पष्टीकरण :-- इसमें प्रयुक्त शब्दों का और पदों का, जो आयकर अधिनियम, '1961 (1961 का 43) के अध्याय 20क में परिभाषित है. वही अर्थ होगा जो उस अध्याय में विया गया है।

अनुनूची :---

सकान नं ० जें-62, स्थित पटेल नगर प्रथम गाजियाबाद ।

तारीख: 21-7-84

मोहर

(जो सागून हो उसे काट दीजिए)

Ref. No. M-1610/83-84.—Whereas, I, J. P. Hilori being the Component Authority authorised by the Central Government in this behalf under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), hereinafter referred to as the said Act, have reason to believe that immovable property having a fair market value exceeding Rs. 1,00,000 and bearing No. J-62, situated at Patel Nagar, GBD (and more fully described in the schedule below) has been transferred and registered *under the registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Ghaziabad under registration No. 21900 dated 7-10-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the transferor(s) and transferee(s) has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer and or;
- (b) facilitating the concealment of any income or any money or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the

said Act, or the Wealth tax Act, 1957 (27 of 1957).

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate p oceedings for acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:

- Shri V. N. Kak, So. Sri Vishan Nath Kak, Ro. 412, Civil LinesL, Roorkee, District Saharanpur. (Transferor).
- Smt. Vimla Devi wo Shri Rameshwar Dayal, Ro 125, New Gandhi Nagar, Ghaziabad. (Transferee).
- 3. Shri|Smt. —do— (Person(s) in occupation of the property).

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in w.iting to the undersigned.

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the official Gazette or a period of 30 days from the service of the notice on the respective persons whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation.—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

House No. J-62, at Patel Nagar District Ghaziabad.

Date: 21-7-84.

SEAL:

*Strike off where not applicable.

J. P. HILORI, Competent Authority.

Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax, (Acquisition Range), Kanpur.